

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : ४७ अंक : ४–५ चैत्र–वैशाख –ज्येष्ठ वि.सं.– २०७८ अप्रेल–मई २०२१ पृष्ठ –२८ सहयोग राशि : अठारह रुपये RNI 43602/77 ISSN No.2581-981X

रणजीत सिंह डिसले

गुरु का मान बढ़ाया



समिति उपाध्यक्ष श्रीमती आशा बोथरा को राजस्थान महिला शक्ति का प्रथम सम्मान

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की उपाध्यक्ष तथा जोधपुर की वरिष्ठ सर्वोदयी आशा बोथरा को राज्य स्तरीय 'इंदिरा महिला शक्ति' प्रोत्साहन से जयपुर में सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास मंत्री ममता भूपेश ने कहा कि उत्कृष्ट कार्य कर महिला विकास में आशा बोथरा ने कीर्तिमान स्थापित किया है। उन्हें ५१,०००/- रुपये एवं प्रशस्ति पत्र देकर समारोह में सम्मानित किया गया। भूपेश ने महिला एवं बाल विकास की जागरुकता सामग्री व कैलेण्डर का विमोचन भी किया। समारोह में महिला अधिकारिता आयुक्त रश्मि गुप्ता, अतिरिक्त निदेशक आभा जैन, प्रीति माथुर, राजेश वर्मा, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान की राज्य एम्बेसेडर डॉ. अनुपमा सोनी सहित अनेक गणमान्य महिलाएं एवं नागरिक उपस्थित थे। इस अवसर पर महिला बाल विकास मंत्री ने सभी को बधाई व शुभकामना देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उल्लेखनीय है कि आशा बोथरा गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र की अध्यक्ष एवं मीरा संस्थान की सचिव भी हैं।

समिति परिवार इस अवसर पर श्रीमती आशा बोथरा को बहुत-बहुत बधाई देता है। ❑

मिशन ताना-बाना

पिछले दिनों समिति में मिशन ताना-बाना की अवधारणा को कार्य रूप देने पर एक बैठक का आयोजन किया गया। अध्यक्ष महोदय की अध्यक्षता में ४ -५ घंटे चली इस बैठक में समिति के कार्यकर्ताओं सहित युवा समाज सेवक एवं आर्किटेक्ट विपिन बाकलीवाल, समाज सेविका नीलम अग्रवाल, फोटोग्राफर अभिषेक कुमावत एवं कवि कलाकार अमित कल्ला ने शिरकत की। बैठक की शुरुआत करते हुए श्री रमेश थानवी ने कहा कि आज समाज का ताना-बाना क्षीण हो गया है। हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या स्वास्थ्य के अलावा लोगों के बिछुड़ जाने की एवं कोरोना से टूटते परिवारों की है। ऐसे समय में हमें जात-पांत के भेद को मिटा कर समाज के बिखरे ताने-बाने को संवारने की जरूरत है। उन्होंने समिति में पिछले १ वर्ष से चल रहे ताना-बाना अभियान के कार्यक्रमों की चर्चा की :

१. हर घर में पोथी घर
२. हर घर को स्वावलंबन
३. गांव-गांव में लोक जागरण
४. गांव-गांव में तारामंडल
५. घर-घर में संत समागम

उक्त बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए श्री रमेश थानवी ने कहा कि यह मिशन हम सबका मिशन है। यह ऐसे लोगों का मिशन है जो समाज के काम में आगे आना चाहते हैं। जिनका मकसद सद्भावी समाज बनाना है।

गंभीर चिंता जताते हुए उन्होंने कहा कि सवाल यह है कि हम इंसानियत को कैसे बचाएं? प्रश्न यह भी है कि आज के समय की हमारी प्राथमिकताएं क्या हैं?

समिति के अध्यक्ष श्री रमेश थानवी ने विशेष तौर से इस अभियान में नौजवानों को जोड़ने पर बल दिया। इस बैठक में बच्चों के लिए आनंद शाला खोले जाने और मिशन ताना-बाना पर वर्चुअल मीटिंग रखे जाने पर भी चर्चा की गई। साथ ही समिति में आर्थिक सहयोग देने पर भी सभी ने अपनी सहमति जताई। बालकों को प्रकृति से जोड़ने एवं कृषि संबंधी जानकारी देने के लिए कृषि के व्यावहारिक ज्ञान पर नीलिमा जी ने अपने फार्म हाउस पर बालकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किए जाने पर अपना सहयोग देने की बात कही।❑



महावीर की वाणी



महावीर की वाणी खिरी,
चिड़िया को सुनाई पड़ी।
'श्रूयताम् धर्म सर्वस्वं'।
'श्रुत्वा चैवाधार्यतम्' ये कहा।
चिड़िया ने आत्मसात् किया
फिर चिड़िया ने वह संदेश
वृक्षों को दिया।
वृक्षों ने वायु को
वायु ने पर्वत को
पर्वत ने सरिता को
सरिता ने सागर को
सागर ने मेघ को
मेघ ने पृथ्वी को
इस तरह सृष्टि में
वीर वाणी गूंज गई।
आदमी उस समय सो रहा था
तब से पृथ्वी के सारे तत्व मिलकर
वह संदेश सुनाने हेतु
आदमी को जगाने का
प्रयास करते रहे,
पर वह नहीं जागा।



फिर ढाई हजार वर्ष बाद
गांधी ने आवाज सुनी
उसने सत्य अहिंसा का नारा दिया
पर आदमी ने कान बंद कर लिये।
आज भी भोर के समय
मैंने चिड़िया की आवाज सुनी
वह अपने बच्चे को सिखा रही थी।
उसकी भाषा परिचित सी लगी।
चिड़िया कह रही थी –
यह महावीर की वाणी है –
'आत्मनः प्रतिकूलानि,
परेषां न समाचरेत्'
लेकिन किससे कहूं
आदमी आज भी सो रहा है। ❑

समानो मन्त्र: समिति: समानी समानं मन: सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूति: समाना हृदयानि व:।
समानमस्तु वो मनो यथा व: सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : ४७ अंक : ४-५ चैत्र-वैशाख-ज्येष्ठ वि.सं. २०७८ अप्रेल-मई (संयुक्तांक), २०२१

क्र म

अपील

समिति के सभी सदस्यों, दूर-दराज के मित्रों एवं भारत के विभिन्न राज्यों में फैले सुधी पाठकों से निवेदन है कि समिति के प्रकाशन की निरंतरता बनाये रखने के लिए अपनी सहयोग राशि पूरी उदारता के साथ भिजवाने का अनुग्रह करें।

आज किसी भी पत्रिका का प्रकाशन बहुत मुश्किल काम है मगर समिति अपने पूर्ण सेवा भाव के साथ अनौपचारिका को पिछले ४७ वर्षों से निरंतर निकाल रही है। सभी प्रबुद्ध पाठक जानते हैं कि अभी हाल ही में कादम्बिनी भी बंद हो गई है जो हिन्दुस्तान टाइम्स का प्रकाशन था। ऐसी स्थिति में हम कटिबद्ध हैं कि अनौपचारिका निरंतर निकलती रहे। आपका सहयोग सादर अपेक्षित है।

बैंक विवरण
BANK OF BARODA
Rajasthan Adult Education Association
Branch Name : IDS Ext. Jhalana Jaipur



I.F.S.C. Code : BARB0EXTNEH (Fifth Character is zero)
Micr Code : 302012030
Acct.No. : 98150100002077

संस्थापक संपादक एवं संरक्षक :
रमेश थानवी
कार्यकारी संपादक :
प्रेम गुप्ता
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
७-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-३०२००४
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com

एक प्रति सहयोग :
व्यक्तिगत ३०/- रुपये
सद्भावना सहयोग :
व्यक्तिगत ३५०/- रुपये
संस्थागत वार्षिक
शुल्क ५००/- रुपये
मैत्री समुदाय ३०००/- रुपये

हमारे जीवन की बगिया किसके हाथ में!!!

यह महीना विश्व स्वास्थ्य दिवस के रूप में मनाया जाता है। विश्व स्वास्थ्य दिवस यानी पूरी दुनिया के लोग स्वस्थ रहें , नीरोग रहें। ना केवल शरीर में कोई रोग हो बल्कि मन और विचारों से भी स्वस्थ रहें। यह आरोग्य पूरा जीवन बना रहे। इसी के साथ हम मूल्यवान बने रहें । जीवन सरस बना रहे और जीवन में माधुर्य बना रहे। 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' तुलसीदास की इस पंक्ति को हम एक पल भी न भूलें, यही हमारी प्रबल इच्छा होनी चाहिए। तभी हम सच्चे मायने में सार्थक जीवन जी सकेंगे । आरोग्यवान हो सकेंगे।

अफसोस तो यह है कि जिस प्रकृति से हम बने हैं, जिस प्रकृति पर हम आस लगाए रहते हैं कि वह हमारे जीवन का सारा संतुलन बनाए रखेगी। उसका स्वयं का संतुलन बिगड़ गया है। आज वही खतरे में पड़ गई है। मानव के विकृत दिमाग और लालच ने उसे भी नहीं बख्शा है।

कोरोना का कहर पूरे विश्व पर मंडरा रहा है। पिछले बरस से हम जीवन और मौत के तांडव को देखते आ रहे हैं। हमारे देखते-देखते कई प्रियजन हमसे बिछुड़ गए। अभी तो हम उस खालीपन को भर भी नहीं पाए कि कोरोना की दूसरी लहर ने हमें बुरी तरह से जकड़ लिया। यह वह समय है जब चिकित्सा स्वास्थ्य सेवाएं भी फेल होती नजर आ रही हैं ।

बरसों से कहावत चली आ रही है कि पहला सुख निरोगी काया। दूसरा सुख घर में माया। आज ये दोनों कहावतें झूठ साबित होती जा रही हैं। क्योंकि आज न तो हमारा जीवन हमारे ही हाथ में रहा है और न माया के घर में होने का कोई लाभ हो रहा है। देखने में यह आ रहा है कि जीवन की डोर ही कहीं छूट गई है। यह किसके हाथों में है और किसने जीवन की यह डोर हमसे छीन ली? इसका जिम्मेदार कौन है ?

देश में प्रतिदिन एक लाख से भी ज्यादा लोग कोरोना के शिकार हुए हैं। ऐसे में बहुत से सवाल दिल को कचोट रहे हैं । सबसे बड़ा यक्ष प्रश्न यह है कि हमारा जीवन किस पायदान पर है? हमारे जीवन की बागडोर किसके हाथों में है? हमारे जीवन का मालिक कौन है? हम स्वयं इस जीवन को चलाने वाले हैं या कि इसका

मालिक कोई और है? सरकार के कानून जीवन को जीने की स्वतंत्रता देने के लिए हैं या उस पर नियंत्रण के लिए हैं । या फिर अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए और अपने नाम की डुगडुगी बजाने के लिए हैं।

आइए, एक नजर आज के माहौल पर डालते हैं । आज हम विश्व में कोरोना के मामले में दूसरे नंबर पर आ गए हैं।

हम देख रहे हैं कि एक ओर तो आम जन का जीना दुश्वार होता जा रहा है। उसे तो २ गज की दूरी बनाए रखने और मास्क लगाने की हिदायतें दी जा रही हैं और ऐसा न करने पर कड़ी सजा भी सुनाई जा रही है। इतना ही नहीं, मास्क न लगाने पर लोगों से दुर्व्यवहार किया जा रहा है।

दूसरी ओर सत्ता में बने रहने का लोभ इतना बढ़ गया है कि वोट तो हर हालत में मिलने ही चाहिए। जान जाए पर वोट न जाए । आज वोट कितने कीमती हो गए कि बिना लोगों की जान की परवाह किये हर हाल में केवल और केवल वोट चाहिए।

पश्चिम बंगाल और उत्तर प्रदेश जैसी जगहों पर बड़ी-बड़ी रैलियां निकाली जा रही हैं। हमारे प्रधानमंत्री स्वयं इन रैलियों को संबोधित कर रहे हैं। वहां तो मास्क पहनने और २ गज की दूरी बनाए रखने के सारे नियम नदारद हो गए हैं। जैसे कि खुद कोरोना ने उनसे कहा हो कि मैं चुनावी रैलियों में प्रवेश नहीं करूंगा।

एक तरफ ऐसे सावचेत करते समाचार-सावधान! मास्क पहनिए अब गर्मी में वायरस सांसों से स्प्रे की तरह फैल रहा है। सारे नियमों और कानूनों को ताक में रखकर लोगों के जीवन की परवाह किए बिना, कुंभ के मेले में और धार्मिक स्थलों पर उमड़ती भीड़ के चलते हम कोरोना के दुष्प्रभाव और उसकी जकड़ से कैसे बच सकते थे ।

सोशियल डिस्टेंसिंग बनाकर एक दूसरे के प्रति असंवेदनशील हो गए। इसका परिणाम यह हुआ कि लोग एक दूसरे को शक की नजर से देखने लगे। इन संदेह से भरी आंखों का सामना करना भी अपने आप में एक पीड़ादायी ही था। इस नजरिये ने एक नए प्रकार के तनाव को जन्म दिया। डिप्रेशन के मामले बढ़ने लगे। लोग अकेलेपन के मानसिक अवसाद में आ गये। यहां तक की युवा वर्ग भी इसकी चपेट से बच नहीं पाया।

स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं मिलने के कारण लोग मौत के शिकार हो रहे हैं। महंगी चिकित्सा सुविधाएं व्यवसाय का रूप ले चुकी है। एक तरफ तो कोरोना का कहर तथा दूसरी तरफ स्वस्थ रहने की चुनौती हमारे सामने है।



मित्रो, आखिर कब तक हम यूं डर कर जिएंगे।

चलो ! एक बार फिर से ऐसे जिएं जहां कोई चुरा न ले हमारी यह हंसी।❑

प्रेम गुप्ता



रणजीत सिंह डिसले सोलापुर जिले (महाराष्ट्र) में सांडवी जिला परिषद प्राथमिक स्कूल में शिक्षक हैं। उन्होंने बालिका शिक्षा में उल्लेखनीय काम किया है। वे भारत के पहले शिक्षक बन गए हैं जिन्हें ग्लोबल टीचर २०२० से सम्मानित किया गया है। ज्ञात हो कि यह पुरस्कार उन्हें यूनेस्को और वर्की फाउंडेशन द्वारा संयुक्त रूप से दिया गया है। वैश्विक स्तर पर यह पुरस्कार शिक्षा में नवाचार करने, शिक्षा को सरल बनाने और उसे वंचित वर्गों तक पहुंचाने की दिशा में लगे शिक्षकों को दिया जाता है।

उन्हें दुनिया भर के १२००० शिक्षकों में से चुना गया है। घर-घर जाकर अभिभावकों को बच्चों की शिक्षा के लिए तैयार करने, शिक्षा में तकनीक के प्रयोग एवं सीखने को एक मजेदार अनुभव बनाने, पाठ्यपुस्तकों का मातृ भाषा में अनुवाद करने एवं उनको कोडेड करने वाले डिसले को हाल ही में विश्व बैंक ने अपना शैक्षिक सलाहकार नियुक्त किया है। ❑

रणजीत सिंह डिसले

आंदोलनकारी शिक्षक



उर्दू के महान शायर मौलाना हसरत मोहानी ने कहा है- 'तालीम हासिल कर, दुनिया को बना बेहतर' बत्तीस साल के रणजीत सिंह डिसले ने बिल्कुल ऐसा ही किया। उनकी शिक्षण यात्रा की यह घटना इसकी पुष्टि करती है। जब वह अपने स्कूल के बच्चों को भूगोल पढ़ा रहे थे तो यह जिक्र आया कि हमारे भू-भाग के ३३% हिस्से को पेड़ों से ढका होना चाहिए। उसी समय एक विद्यार्थी ने सवाल किया कि हमारे गांव का कितना हिस्सा पेड़ों से ढका है ? इस सवाल ने बच्चों के लिए एक ६ महीने लंबे प्रोजेक्ट की नींव रख दी। इसके तहत उन्होंने मालूम किया कि उनके क्षेत्र में केवल २६% हिस्से में ही पेड़ लगे हैं। फिर वे जुट गए इस कमी को पूरा करने में। उन्होंने वे पेड़ लगाए जो उस क्षेत्र की परिस्थितियों के अनुकूल थे। बच्चे अब संरक्षक बन गए पेड़ों के और नए लगाए पौधों के। हर पेड़ पर एक विशिष्ट धातु की पट्टी बांधी गई। जब भी उस पट्टी को अपनी जगह से हटाने की कोशिश होती तो बच्चों के पास एसएमएस से इसकी सूचना पहुंच जाती कि कोई उस पेड़ या पौधे को नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर रहा है। हम अंदाजा लगा सकते हैं कि इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों ने कितना कुछ सीखा होगा। पर्यावरण के जो पाठ उनके मन में इस दौरान गहराई से बैठे, उससे पूरा गांव हमेशा लाभान्वित होगा। क्या यह असली शिक्षा नहीं है?

रणजीत सिंह एक आईटी इंजीनियर बनना चाहते थे लेकिन ऐसा नहीं हो पाया। उनके पिता महादेव डिसले ने शिक्षण को जीविकोपार्जन का साधन बनाने की सलाह दी। वे स्वयं भी महाराष्ट्र के एक जिला परिषद स्कूल के प्रिंसिपल रह चुके थे।

शिक्षण में डिप्लोमा करने के दौरान संकोची रणजीत सिंह पर अपने दो शिक्षकों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। वे थे श्री अमर नलावडे और श्री राजेंद्र माने। नलावडे सर स्पष्टवादी और खुले विचारों के थे। वे पहली ही मुलाकात में बच्चों को अपना मित्र बना लेते थे। रणजीत सिंह जैसे प्रशिक्षणार्थी के लिए यह बात किसी आश्चर्य से कम नहीं थी। उन्होंने विद्यार्थियों को अपना मित्र बनाने का पाठ भी यहीं सीखा। रणजीत सिंह को राजेंद्र माने सर मिले इंटर्नशिप के दौरान। माने सर पूरे

सोलापुर जिले में शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के लिए भगवान से कम नहीं थे । उन्होंने शादी भी नहीं की थी ताकि वे शिक्षक की भूमिका को पूरा समय दे पाएं । वे स्कूल परिसर में ही रहते थे । रात्रि ११:०० बजे तक अतिरिक्त कक्षाएं लेते थे । उनके भोजन-पानी की व्यवस्था भी गांव वाले ही करते थे ताकि वे बच्चों के शिक्षण पर ही अपना ध्यान लगा सकें । माने सर ने रणजीत सिंह में जाने क्या संभावनाएं देखीं कि उन्होंने अपनी एक कक्षा पूरी छः महीने की इंटर्नशिप के लिए डिसले को सौंप दी । इस दौरान रणजीत सिंह ने अपने माने सर के साथ रहकर यह सीखा कि एक शिक्षक की वास्तविक जिम्मेदारी क्या होती है । उन्हें यह एहसास हुआ कि शिक्षक रियल चेंज मेकर्स हैं । यदि इन दोनों शिक्षकों का साथ रणजीत सिंह को नहीं मिला होता तो शायद वे अपना ढाई वर्ष का शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम बीच में ही छोड़ देते ।

शिक्षक वाकई चेंज मेकर हो सकते हैं यदि उनके शिक्षक उन्हें अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से प्रेरित करने की क्षमता रखते हों। ऐसी प्रेरणा शिक्षक को कक्षा की चार दीवारी से बंधने नहीं देती और न ही संसाधनों की कमी और लालफीताशाही उनके मनोबल को तोड़ पाती है ।

वर्ष २००९ में रणजीत सिंह को सोलापुर (महाराष्ट्र) के परितेवाडी गांव में बतौर शिक्षण सेवक नियुक्ति मिली, मगर नौकरी मिलने की खुशी परितेवाडी गांव पहुंचकर काफूर हो गई ।

वहां स्कूल कहा जाने वाला दो कमरों का भवन जर्जर हो चुका था । उसके एक हिस्से में बकरियां बांधी जाती थीं। स्कूल में बच्चों की उपस्थिति न के बराबर थी । आदिवासी क्षेत्र होने से बालिकाओं की उपस्थिति तो कभी-कभी २% तक ही रह जाती थी । बाल विवाह प्रचलन में था। गांव में खेती ही आय का मुख्य साधन थी । ऐसे में लड़कियां अपने छोटे भाई-बहनों की देखभाल और घरेलू कामकाज के चलते घर से स्कूल नहीं आ पाती थीं । लड़के भी खेतों में जाकर अपने परिवार का हाथ बटाते थे। कुल मिलाकर कहा जाए तो बालकों की शाला में उपस्थिति सामाजिक मान्यताओं एवं खेतों में काम होने या नहीं होने से प्रभावित होती थी।

बच्चों की पढ़ाई मुश्किल होने का एक कारण यह भी था कि स्कूल का पाठ्यक्रम बच्चों की मातृभाषा में नहीं था । क्योंकि यह गांव महाराष्ट्र में तो था लेकिन कर्नाटक की सीमा पर होने से लोगों की बोलचाल की भाषा कन्नड़ थी । ऐसे में बच्चों को पढ़ना बोझ लगता था । डिसले के सामने गंभीर चुनौती थी। उनके सामने दो ही रास्ते थे या तो वे चुपचाप बैठ जाएं और बच्चों का इंतजार करें और जब जितने बच्चे आएं उनको पढ़ा कर खानापूर्ति कर दें या फिर इस सारी दिक्कतों का डटकर सामना करें।



अर्णवाज खरस



श्रीमती अर्णवाज खरस मुम्बई की कई स्वैच्छिक संस्थाओं से जुड़ी रहीं और उनको रचनात्मक एवं सुगम्य शिक्षाक्रम अथवा पाठ्यक्रम की रचना में सहयोग देती रही हैं। अर्णवाज स्वयं एकनिष्ठ शिक्षाकर्मी हैं, शिक्षा चिंतक हैं और बाल-वत्सल शिक्षक भी हैं। मुम्बई में रहती हैं और मूलत: पारसी हैं। बालकों को शैक्षिक आनन्द देने के कई तरीकों का अन्वेषण एवं उसके अनुरूप सामग्री निर्माण करने में वे सदा अग्रणी रही हैं। आज भी उनका सम्पर्क महाराष्ट्र की कई स्वैच्छिक संस्थाओं से है और वे शिक्षा का आनन्ददायी बनाने में आज भी संलग्न हैं। ❑

उन्होंने शुरुआत की स्कूल के परिसर को सुधारने से जिससे बच्चों का मन करे वहां आने का और बैठकर पढ़ने का । उन्होंने गांव के बच्चों और उनके परिजनों से संवाद भी शुरू किया । इसके लिए वे गांवों के हर घर और खेत में गए। बच्चों और उनके परिजनों से जुड़ने, उनका विश्वास प्राप्त करने और उनके जीवन को नजदीक से देखने के लिए डिसले ने लोगों के साथ स्थानीय त्यौहारों में भाग लेना शुरू किया । उन्होंने ग्रामीणों के साथ सामुदायिक सहभागिता बैठकों का आयोजन भी किया और उनके जीवन से जुड़े मुद्दों पर बातचीत शरू की । इससे ग्रामीणों का डिसले पर विश्वास जगा । उन्होंने यह महसूस किया कि बच्चों को स्कूल जाना ही चाहिए।

इस प्रक्रिया में डिसले को छह माह का समय लगा । बच्चों का स्कूल आना भी शुरू हो गया। जो बच्चे शाला में अनुपस्थित रहते, उन्हें डिसले सर ढूंढते हुए उनके घर या खेत में पहुंच जाते और उन्हें स्कूल में ले आते । इस तरह बच्चों को अपने आप स्कूल आने और कक्षा में पूरी-पूरी उपस्थिति होने में आठ-नौ महीने का समय लग गया । कक्षा बच्चों से भरी रहे, इसके लिए जरूरी था कि बच्चों को अपनी पढ़ाई में मजा आए। बच्चों को सबसे ज्यादा मजा खेलकूद में आता है । इसलिए शुरू के छह-सात महीनों में बच्चों को किताबों से पढ़ाने के बजाय डिसले ने उन्हें अलग-अलग तरह के खेल खिलाए । स्कूल की चारदीवारी जो पहले उदास और नीरव थी, अब वहां बच्चों की कहानियां, गाने, किलकारियां और शोर- शराबा गूंजने लगा । डिसले की भी यही कोशिश थी कि स्कूल में ऐसा आकर्षण पैदा किया जाए कि बच्चे हर समय स्कूल आने को लालायित रहें। सबसे बड़ी परेशानी भी स्कूल में बिजली न होना । आज बच्चे मोबाइल, लैपटॉप या कंप्यूटर से चिपके रहना चाहते हैं, यह बात किसी से छुपी नहीं है। डिसले ने सोचा क्यों न इलेक्ट्रोनिक उपकरणों को बच्चों की सतत शिक्षा का माध्यम बनाया जाए और इन के माध्यम से रोचक पाठ्य सामग्री बच्चों को परोसी जाए। लेकिन यह संभव कैसे हो ? बच्चों की खातिर डिसले ने अपने जन्मदिन पर अपने पिताजी से एक लैपटॉप की मांग की । लैपटॉप मिल जाने पर उनके स्कूल में बच्चों को उनकी पसंद की फिल्में और कार्टून फिल्में दिखाए जाने का सिलसिला शुरू हो गया । दूसरे बच्चों में भी यह बात फैली। ज्यादा बच्चे स्कूल आने लगे । कुछ दिनों बाद बच्चों को पाठ्यक्रम से संबंधित सामग्री भी स्क्रीन के माध्यम से साझा की जाने लगी । इस तरह गांव में **'एजूटेनमेंट'** की शुरुआत हो गई। बच्चे पीपीटी और छोटे-छोटे वीडियो के माध्यम से पढ़ने लगे। इतना ही नहीं, पाठ्य सामग्री परिजनों को भी भेजी जाने लगी जिससे बच्चे कई बार उस सामग्री को देख सके, समझ सकें। डिसले ने पाठ्य सामग्री को



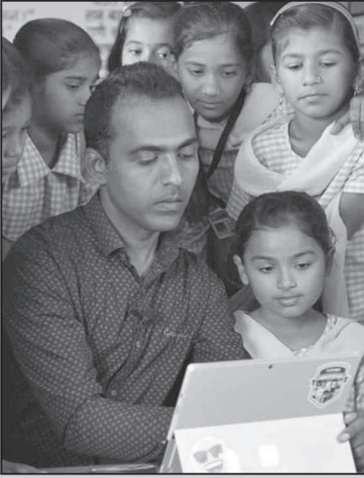
क्या है क्यूआर कोड?

किसी विज्ञापन, पेट्रोल पंप, दुकान, सब्जी वाले, रिक्शे वाले, किसी उत्पाद के रैपर आदि पर एक वर्गाकार आकृति का दिखना आम बात है । इस पर कुछ अलग तरह के पैटर्न बने होते हैं। इसे क्यूआर कोड यानी क्विक रिस्पॉन्स कोड कहा जाता है।
क्यूआर कोड को स्कैन करना होता है । यह स्कैनर हमारे एंड्राइड फोन में तो होता ही है। साथ ही साथ इसे लैपटॉप, डेस्क टॉप और टैब से भी से स्कैन किया जा सकता है। इंटरनेट पर असीमित सामग्री उपलब्ध है और सही सामग्री तक पहुंचना काफी समय लेता है। किसी भी सूचना की पहचान सुनिश्चित करने के लिए उस सूचना को एक नाम दिया जाता है जिसे URL कहते हैं । यह बिल्कुल हमारे घर के पते की तरह होता है । हर



क्यूआर कोड से कोई न कोई यूआरएल जुड़ा होता है। जैसे ही हम क्यूआर कोड को स्कैन करते हैं वह हमें किसी वेबसाइट के यूआरएल तक पहुंचा देता है। इस तरह से चाही गई सामग्री तक हमारी पहुंच बहुत आसान हो जाती है। क्यूआर कोड को स्कैन कर केवल एक क्लिक से बच्चे अपनी पाठ्य पुस्तक पढ़ सकते हैं, उसे डाउनलोड कर सकते हैं, क्यूआर कोड से संबंधित ऑडियो, वीडियो और चित्रों की पूरी गैलरी बच्चों तक पहुंच जाती है। इस कोड को दूसरे के साथ शेयर भी किया जा सकता है। जो किताबों के साथ संभव नहीं हो पाता।
एनसीईआरटी और अधिकतर राज्यों के शिक्षा बोर्ड की पाठ्यपुस्तकों को भी क्यूआर कोडेड किया जा रहा है।

सरल और सरस बनाने के लिए स्थानीय भाषा सीखी और पाठ्य सामग्री का स्थानीय भाषा में अनुवाद भी किया । इस पूरी प्रक्रिया ने बच्चों के लिए पढ़ाई को अत्यंत सुगम बना दिया । इससे पहले बच्चों को मराठी में जो कुछ पढ़ाया जाता था, वह घर आते आते उनकी स्मृति से गायब हो जाता था। क्योंकि बच्चों की मातृभाषा कन्नड़ थी और पढ़ाई मराठी में होती थी । बालकों का स्कूल से लगातार जुड़े रहना तभी संभव है जबकि उनकी शिक्षा में माता-पिताओं की भूमिका सक्रिय हो। उन्हें पता हो कि उनके बच्चों की शिक्षा में क्या आवश्यकताएं हैं? वे क्या सीख रहे हैं? कैसे और क्यों सीख रहे हैं? डिसले इन बातों का जिक्र अपनी सामुदायिक सहभागिता बैठकों में करते और अपनी शैक्षिक योजनाओं को माता-पिताओं से साझा करते, उनकी शंकाओं को दूर करते और उनकी स्वीकृति ले लेते । माता-पिता को बालकों की शिक्षा से जोड़ने के लिए उन्होंने बहुत ही सरल किंतु प्रभावी उपाय किए। जैसे
१. हर दिन दोपहर के २:०० बजे माता-पिता को उस दिन के गृह कार्य का एसएमएस भेजना जिसे बच्चों को उसी दिन पूरा करना होता था ।
२. हर शाम को ७:०० बजे एक सायरन का बजना जो संकेत होता था कि माता-पिता और बच्चे इस समय अपने सारे काम छोड़कर केवल स्कूल के काम पर ध्यान देंगे, उसके बारे में बात करेंगे। ८:०० बजे पुनः सायरन का बजना संकेत होता था कि अब वे मुक्त हैं अपने कामों में लौटने के लिए । इस समय अंतराल को नाम दिया गया '**आवर ऑफ लाइफ**'। जरूरी नहीं कि माता-पिता पढ़े-लिखे हों या अपने बच्चों की पढ़ाई में मदद कर सकें। लेकिन नियमित रूप से अपने बच्चों को गृह कार्य करने, पढ़ाई के लिए प्रेरित करने और पढ़ाई में आने वाली परेशानियों को दूर करने के माता-पिता के प्रयासों ने बालकों पर सकारात्मक असर डाला। वे देख पाये कि उनके बच्चे क्या सीख रहे हैं और एक अकादमिक वर्ष में कितना सीख पाए ? इससे न केवल बच्चों की स्कूल में उपस्थिति बढ़ी बल्कि उनकी सीखने की क्षमता में भी वृद्धि हुई। बच्चों के लिए सीखना आनंददायक हो, सुगम हो, इसके लिए रणजीत सिंह ने पाठ्य पुस्तकों में क्यूआर कोड शामिल करना शुरू किया (२०१७ से महाराष्ट्र की एससीईआरटी पाठ्य पुस्तकें क्यूआर कोडेड होना प्रारंभ हो गई हैं)। इससे बच्चा पाठ्य सामग्री को विस्तार से समझने के लिए ऑडियो विजुअल सामग्री तक पहुंच सकता है जहां पहले बालक के पास पाठ्य पुस्तकों की किसी विषय-वस्तु को केवल एक या दो चित्रों से ही समझने की सीमा होती थी लेकिन अब उसके सामने उसी विषय-वस्तु का पूरा आकाश खुल गया । किताबों को क्यूआर कोडेड करने का विचार



जहां पहले बालक के पास पाठ्य पुस्तकों की किसी विषय–वस्तु को केवल एक या दो चित्रों से ही समझने की सीमा होती थी लेकिन अब उसके सामने उसी विषय–वस्तु का पूरा आकाश खुल गया। किताबों को क्यूआर कोडेड करने का विचार डिसले को वर्ष २०१४ में आया जब उन्होंने एक दुकानदार को क्यूआर कोड स्कैन करते हुए देखा। डिसले की लगातार कोशिश रही है कि बालकों के लिए सीखने की प्रक्रिया एक जीवंत व्यक्तिगत अनुभव बने। पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त बालक के मन में उठने वाले सवालों से संबंधित सामग्री भी वे निरंतर उपलब्ध कराने की कोशिशों में लगे रहते हैं।

डिसले को वर्ष २०१४ में आया जब उन्होंने एक दुकानदार को क्यूआर कोड स्कैन करते हुए देखा। डिसले की लगातार कोशिश रही है कि बालकों के लिए सीखने की प्रक्रिया एक जीवंत व्यक्तिगत अनुभव बने। पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त बालक के मन में उठने वाले सवालों से संबंधित सामग्री को वे निरंतर उपलब्ध कराने की कोशिशों में लगे रहते हैं। सीखने की प्रक्रिया में जब बच्चों की बहु इंद्रियां शामिल होती हैं और उन्हें यह छूट होती है कि वे अपनी गति से और मनचाहे ढंग से सीखें तो ऐसी स्थितियों में बालक अधिकतम सीख पाता है।

डिसले की नजर में अभी एक महत्वपूर्ण काम बाकी था। वह था पाठ्यक्रम की सामग्री को बालक के आसपास के जीवन से जोड़ना। उन्होंने बच्चों को दिए जाने वाले गृह कार्य के लिए इस तरह के असाइनमेंट्स तैयार किए जिससे वह कक्षा में पढ़ाई गई विषय–वस्तु को अपने दैनिक क्रियाकलापों में काम ले सकें। जैसे रोजमर्रा की वस्तुओं का माप, तौल और मूल्य से संबंधित गणना, घर में पानी और बिजली का उपयोग, तापमान और प्रदूषण के स्तर का मापन, आस–पास के पेड़ों की गणना आदि। दिए गए असाइनमेंट्स पर चर्चा भी की जाती थी और उसके आधार पर निर्णय भी लिए जाते थे। तकनीक के प्रयोग से दूरदराज के गांवों के बालकों को बाहर की दुनिया का जीवंत अनुभव कराने का जो काम डिसले ने किया है वह उल्लेखनीय है। इतिहास पढ़ाते समय संबंधित स्थानों की वर्चुअल विजिट और स्काइप द्वारा वहां के गाइड से संवाद बच्चों के लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होता है। बच्चों के लिए विज्ञान की अवधारणाओं को सुगमता से समझ पाना एक चुनौतीपूर्ण काम होता है। डिसले अपने घर पर बनाई एक प्रयोगशाला में अनेक प्रयोग करके बच्चों को दिखाते हैं। बालक उन प्रयोगों का अवलोकन करते हैं, सवाल पूछते हैं और विज्ञान के प्रति उनके मन में जो डर होता है वह दूर होता दिखता है।

इस पूरी प्रक्रिया में बच्चे सोचना सीखते हैं, तर्क करना सीखते हैं, उनमें संवेदनशीलता विकसित होती है, क्रियाशीलता का विकास होता है, बेहतर ढंग से संवाद कर पाते हैं और अपने आस–पास की समस्याओं को हल करना सीखते हैं। बालकों की शिक्षा में पालकों को शामिल किये जाने और तकनीक के इस्तेमाल के चलते कोविड–१९ लॉकडाउन में भी बिना रुकावट के डिसले के विद्यार्थियों की पढ़ाई चलती रही।

कक्षा में सीखने की प्रक्रियाओं को दुरुस्त करते–करते डिसले परितेवाड़ी के स्कूल की चारदीवारी में रहकर भी वर्चुअल फील्ड ट्रिप (वीएफटी) के माध्यम से बच्चों को दुनिया के सुदूर देशों से जोड़ देते हैं। उन्होंने बहुत सारी

वर्चुअल फील्ड ट्रिप पाठ्यक्रम की विषय-वस्तु के साथ पिरोयी। जैसे बच्चों को समुद्री जीवों और सरीसृपों के बारे में पढ़ाते समय ऑस्ट्रेलिया की अंडर वाटर लैब और अमेरिका के कछुओं के अस्पताल का वर्चुअल ट्रिप कराया जाना ।

जो भी बच्चा डिसले सर से एक बार पढ़ लेता है, वह उनका मुरीद हो जाता है । कक्षा ६ का विद्यार्थी ओम शिंदे जब कक्षा चार में डिसले सर से पढ़ता था, तब की याद करते हुए वह कहता है कि उनके पढ़ाने का ढंग बिल्कुल अलग था। वे खुले दिल के इंसान हैं । वे पढ़ाते-पढ़ाते कब दोस्त बन जाते हैं पता ही नहीं चलता । वे हमें पिकनिक पर ले जाते और किताबों की पूरी बातें वहां सजीव होती दिखती थीं। पढ़ाई से जुड़ी बहुत सी फिल्में भी हमको सर दिखाते थे। इन सब से पढ़ाई में मेरी रुचि जगी और कक्षा चार में मैंने पूरे अंक प्राप्त किए ।

रणजीत सिंह डिसले ने बालकों की शिक्षा में जो पहल की उन्हीं के चलते उन्हें अनेक अंतरराष्ट्रीय एक्सचेंज प्रोग्राम्स में आमंत्रित किया गया। पाठ्यक्रम की पुस्तकों में क्यूआर कोड के प्रयोग ने उन्हें माइक्रोसॉफ्ट इनोवेटिव एजुकेटर बना दिया । वर्ष २०१७ में उन्हें अपने शैक्षिक प्रयोगों पर प्रस्तुति के लिए टोरंटो बुलाया गया। वर्ष २०१८ में उनके द्वारा शुरू किए गए कार्यक्रम '**लेट्स क्रॉस द बॉर्डर**' के तहत वे आठ देशों के १८००० से अधिक बच्चों से जुड़े । उन्होंने इन आठ अशांत देशों में घूम-घूम कर विद्यार्थियों की शांति सेना बनाई।

अप्रैल २०१९ में डिसले को अपने प्रोजेक्ट के प्रस्तुतीकरण के लिए माइक्रोसॉफ्ट ने पेरिस में आयोजित एजुकेशन एक्सचेंज कॉन्फ्रेंस में आमंत्रित किया । इसमें ७८ देशों के ३०० प्रतिभागी उपस्थित थे । डिसले को जब भी समय मिलता है, वे दूसरे देशों के बच्चों के साथ संवाद करते हैं । इसके जरिए वे बच्चे भारत को जान पाते हैं।

डिसले अपने संसाधनों एवं अर्जित ज्ञान को बांटने में विश्वास रखते हैं । जब उन्हें लगता है कि बच्चों के साथ काम करते समय काम में ली गई कोई सामग्री या पढ़ाने का कोई तरीका प्रभावी है और बच्चों को अच्छा लग रहा है तो वे अपने साथी शिक्षकों के साथ वीडियो और ब्लॉग के माध्यम से उसे साझा करते हैं, ताकि वे भी उन्हें काम में ले सकें । डिसले न केवल अपने प्रदेश के अपितु विदेशी शिक्षकों को भी प्रशिक्षित करने का काम बखूबी कर रहे हैं।

हाल ही में डिसले को **वर्की फाउंडेशन और यूनेस्को** द्वारा संयुक्त रूप से दिए जाने वाले **ग्लोबल टीचर अवार्ड** से नवाजा गया है जिसमें उन्हें सात करोड़ रुपये का पुरस्कार दिया गया है।

डिसले इंटरनेशनल एक्सचेंज प्रोग्राम के दौरान कई शिक्षकों से



क्या है वर्चुअल फील्ड ट्रिप (वी एफ टी)

वीएफटी के माध्यम से बच्चे अपनी कक्षा में बैठे-बैठे ही मनचाहे स्थान को देख सकते हैं, वहां के लोगों से संवाद कर सकते हैं और किसी भी विषय वस्तु को आसानी से समझ सकते हैं । लाखों स्कूलों में वीएफटी शिक्षा का अभिन्न अंग बन चुका है । इसके माध्यम से स्कूल के विद्यार्थी दुनियाभर के वैज्ञानिकों, शिक्षकों, वन संरक्षकों, ट्यूरियस्ट गाइड, चिकित्सकों, मौसम विज्ञानियों जैसे किसी भी विषय के विशेषज्ञों से संपर्क स्थापित कर सकते हैं । बच्चे जब वर्चुअल फील्ड ट्रिप के दौरान सुनते हैं, देखते हैं और किसी विशेषज्ञ के साथ चर्चा करते हैं तो उनके लिए भी यह सीखने का बेहतरीन मौका होता है । इस समय बच्चों की सहभागिता भी देखने लायक होती है । इसके बाद जो चर्चा होती है, वह भी बहुत गंभीर होती है । ऐसे सीखना बच्चों की शिक्षा में नींव का काम करता है ।

मिले । वे सभी उनके काम से काफी प्रभावित हुए । उनकी खास पहचान बन गई। इसी का नतीजा था कि उन्हें ग्लोबल टीचर अवार्ड देने के लिए २०१९ में एक जापानी शिक्षक ने और वर्ष २०२० में एक वियतनामी शिक्षक ने नामांकित किया। इस पुरस्कार के विजेता के रूप में भाषण देते हुए उन्होंने जीती हुई राशि सात करोड़ की आधी राशि अंतिम दौर में पहुंचे शेष ६ प्रतिभागियों के बीच बराबर बांटने की घोषणा की। बाद में एक मराठी न्यूज़ चैनल एबीपी माझा के एक कार्यक्रम माझी कट्टा में डिसले ने पुरस्कार में मिली राशि को बांटने का कारण बताया । उन्होंने कहा कि मेरे लिए मेरे साथियों के काम भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितना कि मेरा अपना काम। वैसे भी इस पुरस्कार का मूल उद्देश्य है कि लोग पेशे के तौर पर शिक्षण का सम्मान करें और इसे महत्वपूर्ण मानें। मुझे लगता है कि मेरा यह कदम भी इसी दिशा में किया गया प्रयास है । जब ऐसे १० शिक्षक एक साथ मिलकर टीम की तरह काम करें और एक-दूसरे को सहयोग करें तो निश्चित रूप से जो असर दुनिया में आएगा वह अकेले शिक्षक के प्रयासों से कितना ज्यादा होगा, इसकी कल्पना की जा सकती है।



रणजीत सिंह डिसले के समर्पित प्रयासों के चलते ही उनका स्कूल २०१६ में जिले का सर्वश्रेष्ठ स्कूल घोषित हुआ। उस वर्ष उनके स्कूल के ६८% बच्चों ने अपेक्षित शिक्षण परिणाम प्राप्त किये। ८५% बच्चों को **'ए'** ग्रेड मिला। गांव की हर लड़की का स्कूल में नामांकन था और वह नियमित रूप से स्कूल आती भी थी। इसी गांव की पूर्व छात्रा साक्षी शिंदे को शिक्षा के कारण परितेवाडी में किशोर विवाह थम जाना अकल्पनीय लगता है।

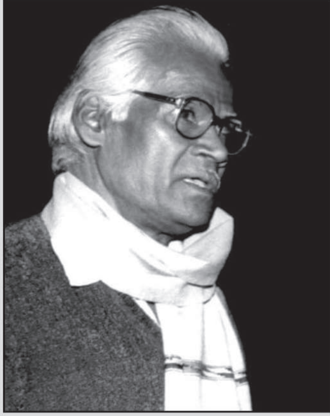
डिसले ने स्कूल के सहयोग से गांव में मरुस्थलीकरण से पार पाना शुरू किया। गांव में ग्रीन कवर जो २६% था, अब ३३% हो गया है । गांव की २५० हेक्टेयर जमीन को मरुस्थल होने से बचाने के लिए स्कूल को २०१८ में विप्रो द्वारा नेचर फॉरेस्ट सोसायटी स्पैरो पुरस्कार दिया गया। रणजीत सिंह नेशनल ज्योग्राफिक एजुकेटर भी हैं और समान दिशा में काम कर रहे शिक्षकों को रास्ता दिखा रहे हैं। डिसले को २०१६ में भारत सरकार द्वारा नवाचारी शोधकर्ता के रूप में चुना गया। २०१८ में नेशनल इनोवेशन फाउंडेशन द्वारा उन्हें शिक्षा में नवाचार के लिए पुरस्कृत किया गया। लेकिन मीडिया ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। डिसले ने इस पर कहा कि हमारे यहां मीडिया किसी अच्छे काम को तब तक तवज्जो नहीं देता जब तक कोई विदेशी सम्मान उसे नहीं मिल जाता है।

यूनेस्को की सहायक महानिदेशक **स्टीफेनिया गियानिनी** को रणजीत सिंह से बड़ी आशाएं हैं। उनका कहना है कि रणजीत सिंह जैसे टीचर जलवायु परिवर्तन को रोकने, असमानता को मिटाने, अर्थव्यवस्था को गति देने तथा शांति और समता जैसे मूल्यों को लेकर चलने वाले समाज निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं । हमारा भविष्य ऐसे शिक्षकों से ही बचेगा । रणजीत सिंह भी आशान्वित हैं कि वे आने वाले वर्षों में दस हजार शिक्षकों को शिक्षा में आमूलचूल बदलाव के लिए तैयार कर देंगे।❑

अनुवाद – मनीष शर्मा

५७, महावीर नगर, सांघी फार्म,

सोनी सेन्टर के पीछे, जयपुर



रामकुमार कृषक



श्री रामकुमार कृषक का जन्म उत्तर प्रदेश के गांव गुलड़िया में हुआ। इनकी प्रमुख कृतियां नीम की पत्तियां, फिर वही आकाश, लौट आएंगी आंखें प्रकाशित हुई।
श्री कृषकजी ने प्रौढ़ शिक्षा के लिए भी टीपू की मां, सबसे सुन्दर हाथ, घीसू और माधो नामक पुस्तकें भी लिखी हैं। वर्तमान में रामकुमार कृषक जनवादी पत्रिका 'अलाव' के संपादक हैं।
इनके द्वारा कोरोना पर लिखे दो पद गीत प्रस्तुत है। ❑

दो पद गीत



१.
साधो,
भुक्खड़ है कोरोना,
ख़तरनाक है दुनिया - भर को
उसका घर में होना !
साधो .....

बेघर है, घर - घर में लेकिन
डर उसका रहता है,
विश्वयुद्ध से भी बढ़कर अब
विश्व उसे सहता है ;

दिख जाए इन आंखों से गर
होगा बहुत घिनौना !
साधो....

उसकी भूख भरे पेटों की
कभी न मरनेवाली,
इसी भूख के कारण रहते
पेट करोड़ों ख़ाली ;

इसी बात पर हैरां हैं हम
इसी बात का रोना !
साधो .....

कहते हैं कोरोना अपना
रूप बदलता रहता,
अलादीन का जिन्न नहीं वह
नहीं किसी की सहता ;

दिन - भर धोएं हाथ भले हम
मुश्किल उसको धोना !
साधो ....

घर में अगर घुसा तो
हमको ही बाहर कर देगा,
सीधे नहीं तो टेढ़े जिनपिंग
ख़बर हमारी लेगा ;

सीख लिया है उसने सबको
सागर - बीच डुबोना !
साधो .....

हो कोई भगवान किसी ने
उसको नहीं बनाया,
किंतु नहीं अपनी मर्ज़ी से
वह धरती पर आया ;

जो हो, महाबली अब सारे
उसके हाथ खिलौना !
साधो .....

२.
साधो ,
इम्यूनिटी बढ़ाओ ,
दिन - भर खटो पेट की
खातिर
फिर भूखे सो जाओ !
साधो ....

दवा नहीं है कोरोना की
करें भरोसा फिर भी ,
करखानों में तला जा रहा
क्वाथ समोसा फिर भी ;

सरकारों का फाल्ट नहीं है
खाओ या मत खाओ !
साधो .....

सही कह रही हैं सरकारें
सरकारें हैं आखिर ,
खतरे उठा रही हैं खुद भी
सिर्फ़ हमारी खातिर ;

नुस्खे दादी - अम्मा वाले
भी घर में अजमाओ !
साधो .....

बाज़ारों में निकलो देखो
सब कुछ खोल दिया है ,
सत्तर सालों से भी बढ़कर
हमने काम किया है ;

काफी कुछ है बचा अभी भी
उसकी खैर मनाओ !
साधो .....

ऐसा अवसर नहीं मिलेगा
आपद से मिलने का ,
देशभक्ति का चाक गरेबां
घर बैठे सिलने का ;

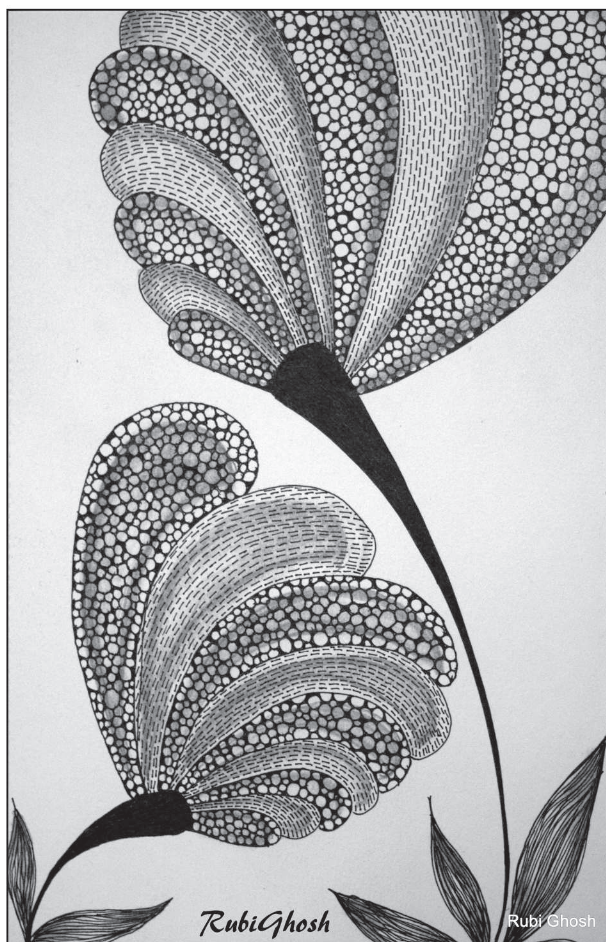
मन माने तो बालकनी में
बजा थालियां , गाओ !
साधो ....

मन की बात करो अपनों से
अपनों को पहचानो ,
अपने सभी नहीं होते हैं
मानो या मत मानो ;

मन तन का संचालक , तन
को तानो , स्वस्थ बनाओ !
साधो ....



सी–३/५९, नागार्जुन नगर,
सादतपुर विस्तार,
दिल्ली–११००९४





सूरज सिंह

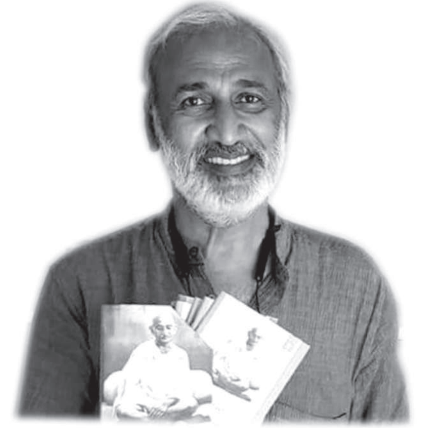


श्री सूरज सिंह २२ वर्षीय स्नातक हिन्दी साहित्य, दिल्ली विश्वविद्यालय, स्नातकोत्तर हिन्दी साहित्य, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षा प्राप्त कर उरमूल परिवार की संस्थाओं के साथ पिछले २ वर्ष से कार्यरत हैं। मेरी रुचि स्वतंत्र रूप से लेखन में है। थार रेगिस्तान से जुड़े विभिन्न पहलुओं जैसे – आजीविका, पारंपरिक ज्ञान, जीवन शैली आदि को सहेजने के लिए उनके दस्तावेजीकरण में विशेष रुचि है ताकि उसे रेगिस्तान की परिस्थितियों और ज्ञान से अनभिज्ञ व्यक्तियों तक पहुंचाया जा सके। उरमूल के अपने साथियों के साथ थार रेगिस्तान के ऊंटपालकों के साथ मिलकर काम किया और बीकानेर, जैसलमेर और जोधपुर के ऊंटपालकों को एक संगठन के रूप में संगठित करने का सफल प्रयास किया। प्रस्तुत है उनकी एक रिपोर्ट। ❑

एक वैचारिक पहल

मरु मंथन





उरमूल परिवार के मुखिया और हमारे संरक्षक अरविंद जी के चले जाने के बाद जो शोक की लहर उरमूल परिवार में फैली, उसने सबको स्तब्ध कर दिया। वजह थी कि किसी ने अरविंद जी के बिना उरमूल की कल्पना ही नहीं की थी। अरविंद ओझा और उरमूल एक-दूसरे के पूरक थे। वह उरमूल रूपी सरोवर के वास्तविक अरविंद थे जो उस सरोवर की शोभा बढ़ाते थे और विपरीत परिस्थितियों में भी अरविंद की तरह ही मुस्कुराया करते थे। अरविंद ओझा रूपी अरविंद तो हमेशा के लिए मुरझा गया लेकिन उसकी महक उस पूरे सरोवर में आज भी विद्यमान है। यह महक अरविंद जी के होने का एहसास है, यह महक उनके कार्यों और उनके विरासत की है जिसे अब हमें संभालना है और इस मरुभूमि में उनके कार्यों को आगे तक लेकर जाना है।

इसी एहसास की सुगंध को प्रत्येक तक पहुँचाने और अपने-अपने अरविंद को पहचानने के लिए ही जो अभिव्यक्ति हुई, उसे 'मरु मंथन' नाम दिया गया। 'मरु मंथन' १३-१४ फरवरी २०२१ को उरमूल सीमांत समिति, बज्जू में आयोजित किया गया। यह महज एक कार्यक्रम नहीं था बल्कि एक परिवार को फिर से सशक्त बनाने और हर एक को अपने अंदर के अरविंद ओझा को पहचानने का मंच था। जहां लोगों ने अरविंद ओझा को जिस रूप में देखा और समझा, उसे बयां किया। यह मंच सिर्फ अरविंद जी के विचार को सब तक पहुँचाने तक सीमित नहीं था बल्कि यह मंच उस कड़ी की तरह था जिसने काफी समय बाद उरमूल परिवार की संगठन शक्ति को और मजबूत करने का काम किया। यह मंच हर उस उरमूल कार्यकर्ता के लिए अभिव्यक्ति और प्रेरणा थी जो अरविंद ओझा के जाने के बाद कहीं न कहीं अंदर से टूट रहा था।

'मरु मंथन' कार्यक्रम रेगिस्तान की पहचान, आजीविका, सामुदायिक विकास और रेगिस्तान से जुड़ी बड़ी साझेदारियों के विकास

आदि विषयों के साथ १३ फरवरी २०२१ को अरविंद जी को भावभीनी श्रद्धांजलि देने के साथ शुरू हुआ और अरविंद जी को भाव सुमन अर्पित करते हुए मौन धारण किया गया।

आज की सुबह बहुत अलसाई सी थी । भारी मन, जलती आँखें, रात भर कोई ठीक से सोया नहीं। आज सब एक-दूसरे को कह रहे थे जाओ थोड़ी देर सो लो पर हमारे साथी थे कि काम कर रहे साथियों को छोड़कर जाने को तैयार नहीं थे। ये पंक्तियाँ महज कविता नहीं हैं जो कि सुशीला ओझा द्वारा इस कार्यक्रम की शुरुआत के साथ बोली गई। यह एहसास था उरमूल की उस परंपरा का जिसमें एकजुटता थी और यह वो समय था जब इस विरासत को दोहराया जा रहा था। उन्होंने उस पुराने पल और साथियों को याद करते हुए रेगिस्तान की रेत और जल के साथ इस कार्यक्रम की भूमिका तैयार की। सुशीला जी ने कहा कि यह वो पल है जब हमें यह सोचना होगा कि हम क्या हैं और हमें कहाँ जाना है। इस कार्यक्रम को उन्होंने रेगिस्तान का उत्सव बताया। इसके साथ ही उन्होंने रेगिस्तान के संदर्भ में 'संचय' शब्द का प्रयोग करते हुए उसे रेगिस्तान की सबसे बड़ी विशेषता बताया। इसके बाद संवाद सत्रों के माध्यम से वैचारिक संगम शुरू हुआ। पहला संवाद सत्र रेगिस्तान की अपनी पहचान को लेकर था जो उसे अन्य क्षेत्रों से अनूठा बनाती हैं। इसके प्रवर्तक मंडल में डॉ. अशोक दलवई (राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण), मीनाक्षी बत्रा (चैरिटी एड फाउंडेशन), तोमियो शिचिरी (संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन, भारत प्रमुख), रश्मि सिंह (महिला एवं बाल विकास आयोग, दिल्ली) और ओम थानवी (वरिष्ठ पत्रकार) जैसे अनुभवी व्यक्ति शामिल हुए। इस चर्चा में रेगिस्तान की अपनी पहचान और संरक्षण को लेकर अपनी बात रखते हुए डॉ. अशोक दलवई ने कहा कि- हमें प्रकृति के हर तत्व को बचाना होगा क्योंकि हमें नहीं पता कि इस प्रकृति को बनाए रखने में कौन सा तत्व कौन सा पारितंत्र क्या योगदान दे रहा है।

इस चर्चा को और विस्तार देते हुए रश्मि सिंह ने कहा कि जब हम किसी समाज की पहचान की बात करते हैं तो हम एक महिला की भी बात कर रहे होते हैं। चूंकि वह रूढ़िवादिता और जिम्मेदारियों में बाध्य होकर अपनी पहचान को सामने नहीं ला पाती, इसलिए यह हमारा दायित्व है कि हम उन्हें आगे लाएं।

वहीं रेगिस्तान की अपनी पहचान पर ज़ोर देते हुए ओम थानवी ने कहा कि 'पंजाब से पानी आने के बाद यह कहा गया कि रेगिस्तान कश्मीर बन जाएगा, उसकी सूरत बदल जाएगी। हम रेगिस्तान की सूरत बदलने की बात क्यों करते हैं रेगिस्तान की अपनी संस्कृति, स्थापत्य और जीवनशैली को अपनाने की बात क्यों नहीं करते।'

इस अवसर पर ओम थानवी ने उरमूल के संस्थापक संजय घोष जी को याद करते हुए एक महत्वपूर्ण बात कही जो कि एक सामाजिक कार्यकर्ता के लिए बहुत बड़ी सीख



हो सकती है। उन्होंने कहा कि- संजय घोष बंगाल से आए और उन्होंने यहाँ की संस्कृति, रहन-सहन को अपनाया। आप किसी समाज की संस्कृति को तभी अपनाएँगे जब आप उस समाज से जुड़ाव महसूस करते हुए अपने उद्देश्यों को लेकर कृत संकल्प हों।

इस तरह यह चर्चा रेगिस्तान की पहचान को केंद्र में रखते हुए संचालित की गई। दूसरा संवाद सत्र बदलावकर्ता, समाज और स्वैच्छिक विकास के मूल्यों पर था। इस संवाद सत्र के प्रवर्तक मंडल में आर.के. अनिल (एनएमडीसी सीएसआर फाउंडेशन), आशीष कोठारी (कल्पवृक्ष), मैथ्यू चैरियन (हेल्प एज इंडिया), दीपचंद सांखला (वरिष्ठ पत्रकार, प्रकाशक) जैसे वक्ताओं से मंच सुशोभित हुआ। चर्चा की शुरुआत करते हुए दीपचंद सांखला ने कहा कि 'मैं चेंजमेकर शब्द पर विश्वास नहीं करता। हमने जो गलतियां की हैं हम केवल उन्हें सुधार सकते हैं, उन्हें बदल नहीं सकते।'

इस संवाद सत्र को आगे बढ़ाते हुए आशीष कोठारी ने विकास के केंद्र में प्रत्येक जीव मात्र को केंद्र में रखते हुए कहा कि ज़्यादातर चर्चा मानव केन्द्रित होती है। हमें इस बात पर ध्यान केन्द्रित करना होगा कि विकास का केंद्र जीव हो क्योंकि विश्व में ५ करोड़ से अधिक प्रजाति के जीव हैं और मानव उनमें से सिर्फ एक है। इसके बाद विकास मूल्यों पर बात को आगे बढ़ाते हुए मैथ्यू चैरियन ने एक संगठन और विकास के कार्यों में पारदर्शिता पर ज़ोर दिया। इन सभी के बीच एक सत्र जो कि पूरी तरह अरविंद जी की यादों को समर्पित था वह था 'रेत का कल'। इस सत्र को अनिरुद्ध उमट (प्रसिद्ध कवि, उपन्यासकार) द्वारा संचालित किया गया। 'रेत का कल' अरविंद ओझा द्वारा लिखी गई पंक्तियां नहीं थीं बल्कि यह उनका एक विचार और एक चिंता थी कि रेत का कल क्या होगा। यहां जब हम बात रेत की कर रहे हैं तो यह महज रेगिस्तान के धोरों और प्रकृति की बात नहीं है बल्कि इसमें रेगिस्तान के प्रत्येक जीव, समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं की चिंता बसी हुई है और यह जिज्ञासा भी है कि रेत का कल कैसा होगा। इस सत्र में किसी ने अरविंद जी के साथ बिताए गए लम्हों के बारे में बताते हुए उन्हें याद किया तो किसी ने उनके द्वारा लिखी गई कविता में उनको खोजा। कई लोग भावुक भी हुए और कुछ ने अपनी भावुकता को गीत के माध्यम से बयां किया। वहीं उरमूल की पुरानी यादों को फिर से तरोताजा करते हुए एक गीत सबकी जुबां पर आया जिसके शब्द-शब्द में जोश और उत्साह की लहर थी। उस गीत के बोल हैं -

तुम मुझको विश्वास दो, मैं तुमको विश्वास दूं

१३ तारीख की शाम को राग स्मरण संध्या भी आयोजित की गई। इसमें गावणियार थार कलाकार समिति के लोक कलाकार नत्थू खान, माने खान और मांगीबाई जी ने कबीर की साखियों, निर्गुण भजनों, झोरावा गीत और अन्य कई लोक गीतों के माध्यम से अरविंद जी को याद किया। इन लोक गीतों में कुछ ऐसे गीत भी सम्मिलित थे जो कि भावनात्मक रूप से उरमूल और अरविंद जी की स्मृतियों से जुड़े हुए थे। चूंकि १४ फरवरी को अरविंद जी का जन्मदिन भी होता है, इसलिए



यह पल और भी भावुक करने वाला था।
अगले दिन यानी १४ फरवरी को भी संवाद सत्रों का यह वैचारिक संगम चलता रहा और पहले संवाद सत्र के प्रवर्तक मंडल में डॉ. बी. रथ (राष्ट्रीय वर्षा सिंचित क्षेत्र प्राधिकरण), डॉ. ए.के.गहलोत (पूर्व उपकुलपति, राजुवास), रमेश सारण (सचिव, उरमूल ट्रस्ट), डॉ. सुमंत व्यास (राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान परिषद), डॉ. सुनील कौल (द एक्शन नॉर्थ ईस्ट ट्रस्ट) जुड़े। इस सत्र में चर्चा का विषय था - 'रेगिस्तान में बहुल आजीविका : व्यवधान को लेकर सीख और तैयारी' इस सत्र के पहले वक्ता डॉ. सुनील कौल थे। उन्होंने अपने जीवन में सीख के आधार पर आजीविका के स्थानीय माध्यमों को पहचानने के महत्व को समझाया। इसके बाद डॉ. गहलोत ने इस थार रेगिस्तान में कृषि और पशुपालन क्षेत्र पर अपनी बात रखते हुए कहा कि-कृषि और पशुपालन क्षेत्र की सबसे बड़ी समस्या यह है कि यह क्षेत्र संगठित नहीं है। यदि हम संगठित होकर अपने अधिकारों की मांग करें तो हमारी मांग जरूर मानी जाएगी। इस प्रकार उन्होंने संगठन और अधिकारों की मांग पर प्रकाश डाला।
इस सत्र में क्षेत्र के ऊंटपालकों ने अपनी आजीविका और ऊंटपालन से संबंधित प्रश्न पूछे। डॉ. बी. रथ ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा कि हम सरकार तक ऊंटपालकों की बात



जरूर पहुंचाएंगे और केंद्र की नीतियों में ऊंट से जुड़ी समस्याओं को लेकर कार्यक्रम तैयार करवाने का प्रयास करेंगे।
ऊंटपालकों द्वारा अपनी आजीविका को लेकर पूछे गए सवालों पर रमेश सारण ने कहा कि सरकार जब कोई काम करती है तो यह मान कर चलती है कि वह दूसरों के लिए काम कर रही है लेकिन यह काम (द कैमल पार्टनरशिप) आपका है क्योंकि यह आप अपने लिए कर रहे हो।
डॉ. व्यास ने ऊंटपालन में घटती रुचि के संदर्भ में अपनी बात रखते हुए उन कारणों पर चर्चा की जिनसे ऊंटपालकों की यह दशा है। उन्होंने कहा कि ऊंट का पारंपरिक प्रयोग भारवाहक के रूप में था और हम सबसे विकसित रेगिस्तान में बैठे हैं इसलिए विकास की अवधारणा में ऊंट पीछे छूट रहा है।
इस तरह आजीविका के विषय पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ जिसमें क्षेत्र के पशुपालक, कशीदाकारी से जुड़ी महिलाओं से लेकर नीति निर्माण से जुड़े अधिकारियों तक ने अपनी बात रखी।
दिन के दूसरे संवाद सत्र में मनोज शर्मा (सहजीवन), सुमिता घोष (रंगसूत्र), श्रष्टांत पटारा (तारा और आईएमईडीएफ), अनुभूति पात्रा (मलाला फंड,भारत), परताब राय शिवाणी (द एजुकेशन एलायन्स) और रमन आहूजा इस कार्यक्रम से जुड़े और 'रेगिस्तान में सहभागी विकास के लिए साझेदारियाँ' विषय पर सार्थक विचार-विमर्श किया। इस सत्र में रेगिस्तान की समस्याओं के समाधान, सहभागी विकास और रेगिस्तान की विरासत को समझने के लिए आपसी भागीदारी को बढ़ाने और मिलकर काम करने पर चर्चा की गई। इस विषय पर सबसे पहले सुमिता घोष ने अपनी बात रखी। उन्होंने रेगिस्तान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि 'रेगिस्तान में जो

टिकाऊपन है उससे पूरी दुनिया सीख सकती है कि संसाधनों का किस तरह उपयोग किया जाये और इसके लिए भागीदारी की आवश्यकता है।'

इसी बात को आगे बढ़ाते हुए रमन आहूजा ने रेगिस्तान के पर्यावरण को आजीविका से जोड़ते हुए इस क्षेत्र में एक दीर्घकालिक सकारात्मक बदलाव लाने के लिए मिलकर काम करने पर बल दिया। वहीं अनुभूति पात्रा ने बालिकाओं में माध्यमिक शिक्षा सहभागिता के आधार पर काम करने की बात कही।

इसके बाद रेगिस्तान और पशुपालन के आपसी संबंधों को लेकर मनोज मिश्रा ने अपनी बात रखी। उन्होंने जैव विविधता संरक्षण और पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में पशुपालन के योगदान पर बात करते हुए इस क्षेत्र में नवाचार को लेकर भागीदारी की जरूरत को आवश्यक बताया।

इस तरह रेगिस्तान को लेकर शिक्षा, आजीविका (कशीदाकारी और पशुपालन), ज्ञान और तकनीक आदि विभिन्न क्षेत्रों में साझेदारियों को बढ़ाने पर चर्चा की गई। इन साझेदारियों में भी किस प्रकार समान उद्देश्यों और लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ा जाये, इसके महत्व पर रमन आहूजा ने प्रकाश डाला।

इन सभी वक्ताओं ने इस कार्यक्रम में मरुभूमि की धरती, जीवन और रहन-सहन से जुड़े विषयों और उरमूल के अभी तक के कार्यों पर विचार रखे। इस कार्यक्रम में उरमूल परिवार से सुशीला ओझा (चेयरपर्सन, उरमूल सीमांत समिति),रमेश सारण (सचिव उरमूल ट्रस्ट), सुनील लहरी (सचिव, उरमूल सीमांत समिति), रामेश्वर गोदारा (सचिव, उरमूल सेतु), धन्नाराम जी (सचिव, उरमूल खेजड़ी संस्थान), चेतनराम गोदारा (उरमूल ज्योति) और अंशुल ओझा (डेजर्ट रिसोर्स सेंटर) और कई उरमूल कार्यकर्ता इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

'मरु मंथन' कार्यक्रम के अंतर्गत दो और महत्वपूर्ण कार्य किए गए-दूध संग्रहण केंद्र का उद्घाटन और प्राकृतिक रंगाई इकाई की नींव रखना। ये दोनों ही इस क्षेत्र की दो प्रमुख मूल्य श्रृंखलाएं हैं जो कशीदाकारी की महिलाओं और क्षेत्र के पशुपालकों से जुड़ी हुई हैं और इन दोनों महत्वपूर्ण मूल्य श्रृंखलाओं को लेकर उरमूल एक लंबे समय से काम कर रहा है। ये दोनों ही इकाइयां इस क्षेत्र में आजीविका के विकल्पों को और मजबूत करेंगी।

इस कार्यक्रम के आयोजन को सफल बनाने के लिए सुनील लहरी सचिव, उरमूल सीमांत समिति ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस कार्यक्रम ने उरमूल कार्यकर्ताओं को संबल प्रदान किया और अपने कार्यक्षेत्र में फिर से डटकर खड़े हो जाने का विश्वास जगाया। आखिर में सिर्फ इतना ही कि अरविंद ओझा जी ने शरीर तो त्याग दिया लेकिन यह किसे पता था कि वह एक विचार बन जाएँगे और एक शरीर को छोड़कर हर किसी के दिल में बस जाएँगे। 'मरु मंथन' का यह क्रम जो अरविंद जी की याद में शुरू हुआ वो आगे भी चलता रहेगा और रेगिस्तान की समस्याओं, संभावनाओं और विचारों को लेकर यह वैचारिक संगम होता रहेगा।❑

उरमूल ट्रस्ट, बीकानेर



प्रोफेसर श्रीलाल औदिच्य



किरन औदिच्य



किरन औदिच्य प्रोफेसर श्री लाल औदिच्य की पुत्री है। किरनजी उदयपुर में रहती हैं। इनके पिता प्रो.श्रीलाल औदिच्य बेहद कर्मठ, संवेदनशील स्वभाव के धनी थे। अपनी कुशाग्र बुद्धि और व्यवहार कुशलता के कारण वे विद्यार्थियों में लोकप्रिय हो गये थे। श्रीलालजी ने विद्यार्थियों को प्रेरित ही नहीं किया था बल्कि उन्होंने कठिन समय में उनका हाथ भी थामे रखा था। यहां तक की अपना पूरा जीवन युवा पीढ़ी को जीवन के नये मानक में ढालने के लिए समर्पित कर दिया। आज भी उनके शिष्यों के दिलों में उनका शीर्ष स्थान है। प्रस्तुत आलेख में किरन औदिच्य पिता की यादों को बयां कर रही हैं। ❑

प्रोफेसर श्रीलाल औदिच्य का जन्म २३ अक्टूबर १९१९ को लखनऊ के एक संभ्रांत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। आपका समस्त शिक्षाकाल लखनऊ में ही बीता। वे बेहद आकर्षक व्यक्तित्व व चरित्र के धनी थे। लखनऊ के स्वर्गीय श्री शंभूलाल तिवाड़ी के खानदान के दो रत्न पं. देवी शंकर तिवाड़ी व श्रीलाल औदिच्य थे। मूलत: करौली (राजस्थान) का निवासी यह परिवार बाद में लखनऊवासी बना। बड़ा परिवार व सामान्य आर्थिक स्थिति के परिवेश में श्री औदिच्य ने लखनऊ में अध्ययन करते हुए राजनीति शास्त्र में एम.ए. किया। पिता श्री गुलाब रामजी के १९४८ में आकस्मिक देहावसान के बाद ताऊ पुत्र श्री प्यारेलाल तिवाड़ी व पं. देवी शंकर तिवाड़ी के साथ अपनी माता भगवती देवी एवं भाई-बहनों समेत जयपुर आ बसे। जयपुर आने के पश्चात् श्रीलाल औदिच्य अपनी योग्यता के बल पर महाराजा कॉलेज जयपुर में राजनीति शास्त्र के व्याख्याता पद पर प्रतिष्ठित हुए काफी लम्बे समय तक महाराजा कॉलेज जयपुर के हॉस्टल के चीफ वार्डन पद पर रहते हुए। महाराजा कॉलेज के छात्रों को समय-समय पर मार्ग दिखाया, श्री औदिच्य ने छात्रों एवं शिक्षक वर्ग में अपार लोकप्रियता प्राप्त की।

आपने १९४८ में राजस्थान एज्यूकेशन सर्विस में पदार्पण किया तथा कई वर्षों तक राजनीति शास्त्र के सहायक प्रोफेसर रहे। तत्पश्चात् १९५५ में आपका स्थानान्तरण जयपुर से श्री महाराज कुमार कॉलेज जोधपुर में राजनीति शास्त्र के डीन के पद पर हुआ।

१९६२ में जोधपुर विश्वविद्यालय की स्थापना होने पर आप राजनीति शास्त्र विभाग के रीडर एवं अध्यक्ष नियुक्त हुए और १९६७ में प्रोफेसर बनाए गए।

जोधपुर विश्वविद्यालय आपकी अन्य सेवाओं से लाभान्वित होता रहा। आप विश्वविद्यालय के छात्रावास के चीफ वार्डन तथा समाज विज्ञान के अधिष्ठाता भी रहे। जोधपुर विश्वविद्यालय विद्यार्थी संघ के प्रथम परामर्शदाता के रूप में श्री औदिच्य ने छात्रों का सतत मार्गदर्शन किया एवं शिक्षक वर्ग में अपार लोकप्रियता प्राप्त की।

उन्होंने रेड क्रॉस सोसायटी, इंडियन काउंसिल ऑफ वर्ल्ड अफेयर्स एवं विश्वविद्यालय कॉलेज अध्यापक संघ में महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया।

प्रोफेसर श्रीलाल औदिच्य अपने आप में प्रेरणास्रोत थे। उनमें महत्वाकांक्षा, लक्ष्य प्राप्ति के प्रति

अदम्य साहस एवं अपार उत्साह था। वे अत्यन्त व्यवहार कुशल, कुशाग्र बुद्धि तथा विद्यार्थियों में अत्यन्त लोकप्रिय थे।

प्रो. औदिच्य सदा अपने विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते थे तथा उस लक्ष्य प्राप्ति के लिए हरसंभव सहायता भी करते थे। ऐसा ही एक उदाहरण उनके शिष्य श्री फिरोज खां जी का था जिनके प्रशंसनीय प्रशासनिक जीवन कि नींव औदिच्य साहब ने रखी थी।

प्रसंग इस तरह है कि एक दिन औदिच्य साहब ने कक्षा में सूचना दी कि अखबार में आर.ए.एस. परीक्षा में बैठने की सूचना निकली है। इच्छुक छात्रों ने हाथ खड़े किए।

उनमें से एक विद्यार्थी फिरोज खां जी ने हाथ खड़ा नहीं किया। श्रीलाल जी ने उनको आगे बुलाकर कहा कि तुम फॉर्म क्यों नहीं भरना चाहते? उन्होंने कहा कि एक तो चार सौ रुपये चाहिए जो मेरे पास नहीं है। दूसरी बात पास होना मुश्किल है। बात उस दिन वहीं समाप्त हो गई। मगर दूसरे दिन प्रोफेसर श्रीलालजी ने फिरोज जी को अपने पास बुलाया, चार सौ रुपये दिए और कहा कि फॉर्म भरो, फेल हो गए तो मेरे रुपये गए और पास हो गए तो जब तुम्हारे पास हो, वापस अपने इस गुरु को दे देना। श्रीलालजी ने केवल प्रेरित ही नहीं किया, परीक्षा के लिए स्टेशन से विदा किया और अंत में परिणाम भी सबसे पहले उन्होंने फिरोज जी को हाथ में दिया। नौकरी लगने के बाद भी जहां- जहां फिरोज खां रहे, वहां प्रोफेसर साहब ने जाकर उनकी कुशल क्षेम पूछी।

ऐसे सौम्य व्यक्तित्व, सात्विक जीवन, कर्मठ और संवेदनशील स्वभाव के धनी औदिच्य साहब ने दो दशकों तक राजस्थाान के शिक्षा जगत में तरुण पीढ़ी को नये जीवन मानकों में ढालने के लिए अपना पूर्ण जीवन समर्पित किया। मूक और मौन साधक के रूप में अपने आचरण और आदर्शों से उन्होंने अशक्त को शक्ति प्रदान की व सशक्त को कुछ कर गुजरने की राह दिखाई। निर्बल को संबल तथा निराश नवयुवकों को उन्होंने प्रेरणा दी। आज भी उनके अनेक शिष्य राजनीतिक, वाणिज्यिक व सामाजिक क्षेत्र में शीर्ष स्थान रखते हैं। राजनीति शास्त्र के इनके विशद ज्ञान के अनुभव ने अनेक छात्रों को पीएच.डी. करवाई। इन्होंने राजनीति शास्त्र के कई ग्रंथों की रचना की, कई सारी पुस्तकें और शोध पत्र लिखे। प्रो. औदिच्य अपने पीछे वृद्धा माता, पत्नी, दो पुत्र एवं पांच पुत्रियों का भरा-पूरा परिवार छोड़ गए।

प्रात: स्मरणीय, आज यादों के झरोखे में खड़े होकर विगत पर दृष्टिपात करती हूं, तो न जाने कितनी मन मोहक यादें सामने उभर आती हैं। प्रो. औदिच्य का शिक्षा जगत, समाज व राष्ट्र निर्माण में योगदान अतुल्य है और वे भावी पीढ़ियों के लिय सदैव प्रेरणा पुंज रहेंगे। ❑

१४८, टेक्नोक्रेट सोसायटी, बेदला रोड, उदयपुर



प्रात: स्मरणीय, आज यादों के झरोखे में खड़े होकर विगत पर दृष्टिपात करती हूं, तो न जाने कितनी मन मोहक यादें सामने उभर आती हैं। प्रो. औदिच्य का शिक्षा जगत, समाज व राष्ट्र निर्माण में योगदान अतुल्य है और वे भावी पीढियों के लिय सदैव प्रेरणा पुंज रहेंगे।

योगी रमणनाथ जी की तीन किताबें

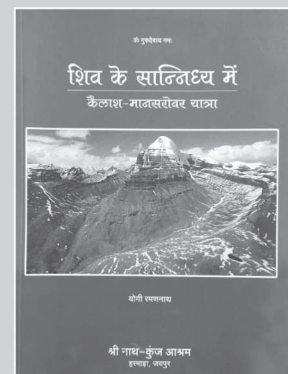


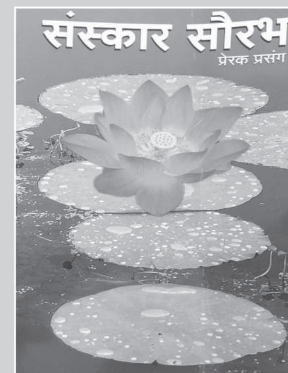
शिव के सान्निध्य में

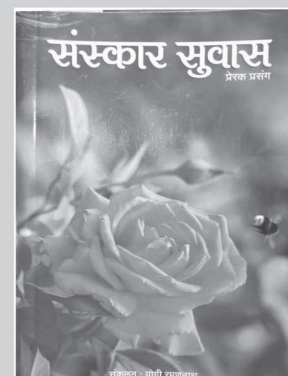
हर सनातन धर्मावलंबी की प्रबल इच्छा होती है कि एक बार अपने आराध्य देवाधिदेव महादेव के पावन स्थल कैलाश मानसरोवर की यात्रा करे। इस पावन यात्रा के संस्मरण पढ़ने के बाद योगी रमणनाथ के मन में भी कैलाश शिखर के दर्शन की अभिलाषा जगी थी। हालांकि इसके लिए उन्हें लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी। भगवान शिव की कृपा से करीब २५ वर्ष बाद उन्हें यह सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्षों पुरानी साध पूरी होने पर एक साधक अपने इष्ट का आभार प्रकट करता हुआ उस अवसर को पुण्य-प्रसाद मानकर ग्रहण करता है, वहीं कुछ ऐसे भी साधक होते हैं जो अपने मनोभावों और अनुभवों को शब्दों में उकेरकर उसे प्रभु-प्रसाद के रूप में अन्य लोगों के सामने भी परोस देते हैं। योगी रमणनाथ की पुस्तक 'शिव के सान्निध्य में' उनकी कैलाश-मानसरोवर यात्रा के अनुभवों को पाठकों तक पहुंचाने का ऐसा ही प्रयास है।

लखनऊ से नेपालगंज के लिए बस के द्वारा रवानगी के समय महिलाओं के मधुर समवेत स्वर में, बोलो रै बैलियां इमरत वाणी हर हर महादेवऽऽऽऽ, का जब वे उल्लेख करते हैं तो ऐसा महसूस होता है कि हम भी लेखक के साथ इस यात्रा में शामिल हो गये हों। पुस्तक में मार्ग में नजर आने वाले मनोरम प्राकृतिक दृश्यों का इस बखूबी से वर्णन किया गया है कि आनंद आ जाता है। लेखक इस बात को लेकर भी चिंतित दिखता है कि प्राकृतिक संपदाओं से संपन्न नेपाल के वासी इतने निर्धन क्यों हैं। दरअसल लगभग डेढ़ दशक से चल रहे विविध आंदोलनों ने नेपाल के गरीबों के मुंह का निवाला छीन लिया है। चीन द्वारा नेपाल की जनता को भारत के विषय में बरगलाने की चिंता भी साफ दिखती है। वहीं, तिब्बत में प्रवेश करने पर वहां चीन की दादागीरी को भी लेखक ने रेखांकित किया है।

इसके बाद मानसरोवर आता है, जहां से यात्रियों को पवित्र कैलाश शिखर के दर्शन होते हैं। लेखक यहां आपको अन्य विशेषताओं की चर्चा के साथ ही मानसरोवर के जल में स्नान करने की उचित विधि बताना भी नहीं भूलता। भारतवर्ष की जीवन धारा नदियों के उद्गम स्थल पर पहुंचने के बाद वह कृतज्ञता के भाव से इनकी उपादेयता को स्वीकार करता है। योगी रमणनाथ मानसरोवर और राक्षसताल की खूबियां-खामियां बताते हुए कहते हैं कि मानसरोवर







किस तरह हमारे लिए पवित्र है, वहीं राक्षसताल के जल का स्पर्श करना भी उचित नहीं समझा जाता। मनुष्यों की कौन कहे, राक्षसताल में एक पक्षी तक नजर नहीं आता। ...और परिक्रमा पथ के बाद आता है यम द्वार। ऐसी मान्यता है कि यम की सीमा यहीं तक है। उसके पार जाने वाले शिवभक्तों पर यम का अनुशासन और कायदे-कानून नहीं चलते। परिक्रमा के दौरान शिव की भक्ति में लीन होने के बावजूद योगी रमणनाथ जैनियों के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के निर्वाण-स्थल अष्टापद और प्राचीन बौद्ध मठों के बारे में भी बताते हैं। परिक्रमा पथ में जगह-जगह यात्रियों द्वारा फेंकी गई पॉलिथीन की थैलियों से पर्यावरण को होने वाले नुकसान के बारे में पढ़कर लेखक का मन आहत होता है। पुस्तक में परिक्रमा पथ में नजर आने वाली जैव विविधता का भी बखूबी वर्णन किया गया है।

इस पुस्तक के हर बायें पृष्ठ पर कैलाश-मानसरोवर यात्रा के मनोहारी चित्रों तथा उसके सामने दायें पृष्ठ पर यात्रा वृत्तांत को शब्दों में इस तरह करीने से संजोया गया है कि इसे पढ़ते हुए मन में इस पावन यात्रा का सौभाग्य पाने की लालसा बरबस ही जाग उठती है। संभवतः पाठकों की इसी मनःस्थिति को समझते हुए लेखक ने पुस्तक के अंत में यात्रा के बारे में हर जरूरी सुझाव देना जरूरी समझा है।❑

पुस्तक: शिव के सान्निध्य में
लेखक : योगी रमणनाथ
प्रकाशक : योगी भावनाथ,
श्रीनाथ कुंज आश्रम हरमाड़ा, जयपुर
मूल्य : २०० रुपये

संस्कार सौरभ एवं संस्कार सुवास

कोरे उपदेश चाहे कितने ही उपयोगी क्यों न हों, आम आदमी पर उतना प्रभाव नहीं डाल पाते। वहीं यदि उन उपदेशात्मक बातों को कहानी के रूप में सुनाया जाए तो उसका प्रभाव काफी अधिक होता है। कहानियों, दृष्टांतों के माध्यम से जनमानस को जीवन मूल्यों की सीख देने की हमारे यहां पुरानी परंपरा रही है। बच्चों को बातों ही बातों में पशु-पक्षियों की कहानी के माध्यम से नैतिक शिक्षा दी जाती रही है। पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे अनेकानेक ग्रंथ इसके प्रमाण हैं। हजारों साल बीत जाने के बावजूद इनका महत्व कम नहीं हुआ है।

ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकालय की सुविधा जहां नाम मात्र की होती है, वहीं प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में तो यह सुविधा बिल्कुल ही नहीं होती। उन विद्यार्थियों तक महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग पहुंचाने के उद्देश्य से योगी रमणनाथ सद्संस्कार समिति ने 'संस्कार बिंदु' का प्रकाशन शुरू किया। बड़ी संख्या में इसकी प्रतियां विद्यालयों को निःशुल्क भेजकर प्रधानाध्यापकों से आग्रह किया जाता है कि प्रार्थना के समय इसके प्रसंगों को पढ़कर सुनाया जाए। इनका लाभ और पाठक भी उठा सकें, इसी उद्देश्य से समिति ने 'संस्कार बिंदु' में शामिल प्रेरक प्रसंगों को दो पुस्तकों 'संस्कार सौरभ' और 'संस्कार सुवास' के रूप में प्रकाशित किया है। इनमें रामायण, महाभारत के साथ ही पौराणिक आख्यानों के प्रसंगों को शामिल किया गया है। वहीं, ऐतिहासिक घटनाओं के साथ ही महात्मा गांधी, सरदार पटेल, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, आचार्य जेबी कृपलानी समेत अन्य स्वतंत्रता सेनानियों तथा स्वामी विवेकानंद, मुंशी प्रेमचंद जैसी विभूतियों के जीवन से जुड़े प्रसंग भी हैं। पेड़-पौधों तथा पशु-पक्षियों के बीच बातचीत के माध्यम से जरूरी जीवनोपयोगी सीख देने के साथ ही कन्या भ्रूण हत्या पर रोक, दहेज प्रथा उन्मूलन तथा शराब, गुटखा-तंबाकू आदि का व्यसन छोड़ने का संदेश भी दिया गया है। कुल मिलाकर दोनों ही पुस्तकें सभी आयुवर्ग के पाठकों के लिए उपयोगी बन पड़ी हैं। ❑

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य : १५० रुपये दोनों किताबों के प्रकाशक : योगी रमणनाथ सद्संस्कार समिति सांभरलेक, जयपुर से मंगायी जा सकती हैं।

अस्पतालों के लिए
हम लड़े ही कब थे?
मंदिर और मस्जिद के लिए
लड़े थे और देखिए वो दोनों
आज बंद हैं। ❑

– बीरेन्द्र रंजन



आनॅलाइन शिक्षा से जुड़ा पन्ना

अनौपचारिका के फरवरी, २०२१ के स्तम्भ 'पिछला पन्ना' पर संस्थापक संपादक संरक्षक श्रद्धेय रमेश थानवी की ये पंक्तियां –

''आरोपित शिक्षा का शिकार हर बच्चा आत्महंता है। मन मारकर पढ़ता है। पढ़ने का स्वांग भी करता है क्योंकि उनींदी आंखों से कितना कुछ देखा जा सकता है, इसे तो कोई मनोवैज्ञानिक ही समझेगा। .... बालकों के कोमल दिलों पर क्या बीत रही है, इसे कोई शिक्षा व्यवस्था सुनने को तैयार नहीं है। ''

मर्मांतक पीड़ा के साथ हृदय को विचलित कर गईं। कोरोना कालखंड में पूना निवासी इंजीनियर पुत्र दीपक से पौत्र शिखर की ऑनलाइन पढ़ाई के बारे में चर्चा होती रही। इस नये संदर्भ में पूछे गये सवालों के उत्तर में दीपक की राय थी कि पढ़ाई के नाम पर कुछ नहीं होने से कुछ तो था। अभिभावकों की शिकायत पर पढ़ाई की अवधि छह से साढ़े चार घंटे की गई ताकि बच्चों की आंखों पर दबाव कम रहे। पाठ्यक्रम चैप्टर में कमी से फाउंडेशन कमजोर हुई। अलबत्ता कम्युनिकेशन का स्तर सुधरा। क्लास रूम में पढ़ाने वाले शिक्षकों के प्रशिक्षण पर नये सिरे से ध्यान देना होगा। घर में कैद बच्चे दया के पात्र बने और विद्यालय की अन्य शैक्षणिक गतिविधियों से वंचित रहे।

शिखर की मां श्वेता का अनुभव रहा कि स्क्रीन पर बैठे बच्चों पर ध्यान और रसोई का तालमेल बिठाना कई बार मुश्किल हो जाता था। टीचर से शिकायत मिली कि एक बार शिखर की आंखें स्क्रीन की अपेक्षा यू-ट्यूब पर थीं। वह फुटबाल मैच देख रहा था। फुटबॉल की कोचिंग करने वाले पांचवीं कक्षा के विद्यार्थी शिखर ने अपने दादा से मन की व्यथा कही। अपने साथियों से मिलने, मस्ती करने, खेलने-कूदने से वंचित हो गए। होमवर्क की जांच का झंझट खत्म। तकनीकी खराबी से कुछ देर पढ़ने से छुट्टी मिल जाती थी।

कोरोना संकट से निपजी परिस्थितियों में ऑनलाइन शिक्षा का विकल्प पब्लिक स्कूलों में येन-केन प्रकारेण निभा लिया गया लेकिन सरकारी विद्यालय तो रामभरोसे रहे। ऐसी विषम परिस्थिति में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था को प्राप्त अनुभवों के संदर्भ में कारगर बनाने की आवश्यकता है। इस व्यवस्था में सहज प्रश्नोत्तरी का अभाव है और इसके बिना विद्यार्थी का ज्ञानवान होना टेढ़ी खीर है। भारत के प्राचीन उपनिषदों का आधार प्रश्नोत्तरी है। हमारी संस्कृति ही प्रश्नोत्तरी की संस्कृति है। राजस्थान विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो.आर.सी.मेहरोत्रा का कहना था कि मेरे सुयोग्य विद्यार्थियों के गूढ़ प्रश्नों के उत्तर की खोज में मुझे ख्याति मिली।

इस दृष्टि से दूरस्थ शिक्षा की अवधारणाओं को देखना उचित होगा। अपरिहार्य कारणों से नियमित उच्च शिक्षा से वंचितों के लिए इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) के माध्यम से पत्राचार पाठ्यक्रम से डिग्री हासिल करने की व्यवस्था की गई। राजस्थान विश्वविद्यालय ने अस्सी के दशक में अन्य विषयों के साथ पत्रकारिता अध्ययन को भी पत्राचार पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया। व्यावहारिक ज्ञान के अभाव में डिग्रीधारकों की संख्या में वृद्धि हो गई लेकिन पत्रकारिता क्षेत्र में इनका योगदान नगण्य रहा, अलबत्ता उन्हें जनसम्पर्क सेवा से जुड़ने का पर्याप्त अवसर मिला। अध्ययन-अध्यापन की इस स्पर्धा में पत्रकारिता के विश्वविद्यालयों तथा संस्थानों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसके बावजूद समाचार पत्र संस्थानों में प्रशिक्षु पत्रकारों को अनुभवी संपादकीय टीम की सहायता से पत्रकारिता क्षेत्र में अपना हुनर दिखाने की गुरुकुल परम्परा को बल मिला है। ❑

गुलाब बत्रा

५/३१५, मालवीय नगर,
जयपुर-३०२०१७

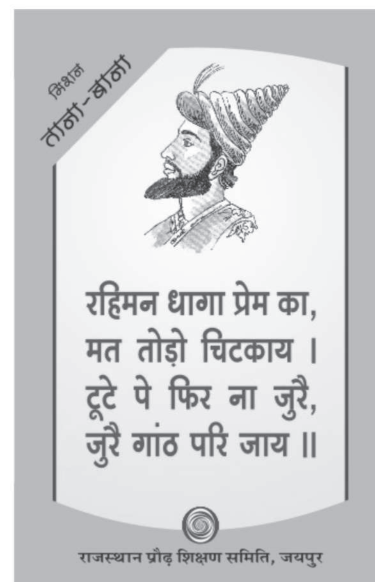
आभार...

पूरा विश्व, समूचा राष्ट्र, हर शहर, गली-मोहल्ला, पास-पड़ौस सब जगह दहशत छायी थी। डरे हुए लोग, घरों में बंद कमरों में बैठे थे। कभी-कभार खुली हवा के लिए पल भर को बाहर आने की हिम्मत कर लेते थे और फिर उसी दड़बे की शरण ले लेते थे। मैं निडर हो कर घूम रहा था। गांव-गांव, गली-गली और घर-घर तक के बीच। लोग डरा भी रहे थे, मगर मैं बेफिक्री के साथ संकट में समाज के काम आ जाने की लगन में मगन था। एक दिन सवेरे ४.०० बजे झुरझुरी हुई, थोड़ी सर्दी लगी, चादर ओढ़ ली और सो गया। चादर ओढ़ने के बाद थोड़ी गहरी नींद आयी जो कि कभी आती नहीं है। मैं इस नींद का राज समझ गया था। मन में एक एक अहसास जगा था कि यह कोरोना की आहट है। दस्तक है। फिर भी काम पर निकल गया था।

मेरी बेफिक्री के बावजूद कोरोना ने दबोच लिया था। ३ दिन घरेलू इलाज के साथ घर में बिताये। मगर चौथे दिन उखड़ती सांस के साथ अस्पताल भागना ही पड़ा। सुखद संयोग था और अपने बड़े भतीजे ओम थानवी का त्वरित निर्णय था । अस्पताल में पलंग, ऑक्सीजन और दवा की कोई कमी नहीं आयी। मैं अस्पताल में था और छोटी बेटी गुनगुन घर पर थी। उसे भी कोविड ने दबोच लिया था। हमारे कोविडग्रस्त होने की खबर न चाहते हुए भी दूर-दूर तक फैल गयी थी। सभी मित्र लोग और परिवारिक संबंधी चिंतामग्न हो गये थे। सब तरफ से दुआ और प्रार्थना के समाचार मिल रहे थे। कई मित्र लोग बिलख-बिलख कर मेरे जल्द ठीक होने की दुआ कर रहे थे। मैं कमोबेश फोन से दूर था, मगर फिर भी कभी-कभी घंटी बज जाती थी और मुझे कहना पड़ता था कि आप चिंता न करें, मैं जल्दी ठीक होकर आ जाता हूं। मेरा विश्वास दवा पर नहीं था। मैं अपने आप पर विश्वास और दुआओं से मिली हुई ऊर्जा का भरोसा अधिक कर रहा था। सबको आश्वस्त कर रहा था कि चिंता मत कीजिए, आपकी प्रार्थना जरूर मुझे बचा लेगी। उनकी कांपती आवाज में दहशत को महसूस करके मैं बार-बार उनको आश्वस्त कर रहा था-दुआ दवा से बड़ी होती है। बस, वही काम आयी और मैं पुन: अपने काम में सक्रिय हो गया हूं। थकान, कमजोरी, बेचैनी सब बनी रहती है। कारण दवाओं का दुष्प्रभाव है। एक दवा के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए दूसरी दवा दी जाती है और दूसरी के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए तीसरी दवा दी जाती है। डॉक्टर कहता है यह तो प्रोटोकल है। मैं सोचता हूं कि ऐसी स्थिति में सबको मान लेना चाहिए कि दुआ, दवा से बड़ी होती है।

मैं इतना सब लिख ही इसलिए रहा हूं कि मैं उन तमाम दुआओं, प्रार्थनाओं और आत्मीय चिंताओं के प्रति शुक्रगुजार हूं। जितनी डरा देने वाली बीमारी से हम बाप-बेटी अगर सहज रूप से निकल आये हैं तो यह लोगों के वत्सल आशीष का ही परिणाम है। पूरे देश से मुझे मंगलकामनाओं के संदेश मिल रहे थे। हर कामना, हर संदेश मेरे लिए जीवनदायी था, इसलिए आज मैं सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। मैंने इन दो महीनों में जिस आत्मयीता और प्रेम की जिस प्रगाढ़ता को देखा है, उसका एहसास मेरे साथ जन्मभर बना रहेगा। बार-बार मैं सबको संबोधित करके यही कहता रहूंगा-आभार, आभार और आभार। ❑

रमेश थानवी





सेहत में स्वावलंबन

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति की ओर से २५ मार्च को 'सेहत में स्वावलंबन' विषय पर वैद्य प्रोफेसर श्री कृष्ण खांडल का व्याख्यान आयोजित किया गया। युवाओं से खचाखच भरे सभागार में प्रो. खांडल ने कहा कि हमारे देश में संविधान निर्माण के समय ही तय किया गया कि स्वास्थ्य और चिकित्सा दो अलग-अलग विभाग होंगे, मगर स्वास्थ्य उपेक्षित रहा और चिकित्सा पर ही अधिक ध्यान दिया गया।

उन्होंने कहा कि वर्ष १९८० में हुए संयुक्त राष्ट्र संघ के सम्मेलन में वर्ष २००० तक 'सबके लिए स्वास्थ्य' का लक्ष्य रखा गया था, मगर तय अवधि खत्म होने के दो दशक बाद भी इसे प्राप्त नहीं किया जा सका है। विश्व स्वास्थ्य संगठन खुद ही कोरोना वायरस को लेकर दिग्भ्रमित है। वह तय नहीं कर पा रहा है कि इसका मूल कारण क्या है, इसकी चिकित्सा क्या है और इसकी रोकथाम कैसे की जा सकेगी। कोरोना के उपचार को लेकर कोई स्ट्रेटजी नहीं रही। सबने अपने-अपने हिसाब से इलाज किया। किसी ने काढ़ा पीकर तो किसी ने आयुर्वेदिक चूर्ण से तो किसी ने अन्य नुस्खों को आजमाकर काम चलाया। नीति नियंता कोरोना के कारण हुई मौतों को एक प्रतिशत पर नियंत्रित करने का उत्सव मना रहे हैं।

प्रो. खांडल ने कहा कि आत्मा, मन और इंद्रियों की प्रसन्नता ही स्वास्थ्य है। यह वनस्पति से ब्रह्म तक की यात्रा ही है। बीमारी का नहीं होना सेहत नहीं है। यदि स्वास्थ्य की साधना करनी है तो रोज दो घंटे देने होंगे। एक घंटा लगाकर शुद्ध वस्तुएं चुनकर लानी होंगी जिनमें खाद और कीटनाशक रसायनों का उपयोग नहीं हुआ हो। और फिर भोजन को पचाने के लिए एक घंटा शारीरिक श्रम कीजिए। यदि आप अपनी वजह से आनंद में हैं तो आप जीव हैं और आपके कारण सारी दुनिया आनंद में है तो आप परमात्मा हैं।

प्रो. खांडल ने व्याख्यान के बाद श्रोताओं की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। सेहत के लिए चीनी कितनी नुकसानदेह है ? एक श्रोता के इस सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि आदमी के लालच ने सारी व्यवस्था को दूषित कर दिया है। हर चीज में मिलावट की जा रही है। ऐसे में जागरुकता का स्तर बढ़ाना होगा। खाद्य वस्तुओं की निर्माण प्रक्रिया समझनी होगी और इसकी पड़ताल करनी होगी। एक अन्य श्रोता के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि पिछले २० वर्षों में आयोडाइज्ड नमक ने प्राकृतिक नमक को चलन से बाहर कर दिया। इसके परिणामस्वरूप आज बहुत बड़ी आबादी थायरायड की बीमारी से पीड़ित है। आरओ के पानी के इस्तेमाल से भी बीमारियां बढ़ी हैं। उन्होंने कहा कि बहुत सारी सामान्य बीमारियों का उपचार रसोई में काम आने वाले मसालों से किया जा सकता है। उन्होंने सोंठ, अदरक, हल्दी, धनिया, जीरा, मेथी, सौंफ, कलौंजी आदि की उपयोगिता के बारे में नई पीढ़ी को बताने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन सुबह १० हजार कदम अवश्य ही चलना चाहिए। ❑



स्वत्त्वाधिकारी राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति द्वारा कुमार एंड कम्पनी, जयपुर में मुद्रित तथा
७-ए, झालाना संस्थान क्षेत्र, जयपुर-३०२००४ से प्रकाशित। संपादक - रमेश थानवी

स्मृति शेष

डॉ. श्रीलाल मोहता

भाई श्रीलाल मोहता का जाना एक न मानने योग्य तथ्य है। कौन विश्वास करेगा और कौन यह कहने का साहस करेगा कि श्रीलाल मोहता नहीं रहे। कितना दुखद और असह्य है यह इसकी तो हम किससे बात करें और दिलासा भी हमको कौन दे? क्योंकि हर संकट में, हर तकलीफ में श्रीलाल मोहता न केवल साथ रहते थे, बल्कि एक बहुत बड़ा संबल थे। थे, लिखना भी बहुत अखर रहा है, मगर यह हमारी दर्दनाक विवशता है।

श्रीलाल जी, शिक्षा, संस्कृति और लोक–कल्याण को समर्पित एक बड़े अध्येता थे। स्कॉलर थे। स्वाध्याय उनके जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा था और चिंतन–मनन उनके जन्मजात स्वभाव का अनिवार्य अंग था। वे हर वक्त कुछ सोचते रहते थे, मनन करते थे और गहन चिंतन–मनन में नये अर्थ पाते थे। लोक–वत्सल स्वभाव के कारण वे समाज सेवा के, लोक शिक्षा के अथवा संकटमोचन के काम में तुरंत शरीक हो जाते थे।



कल हम साथ–साथ थे और आज हम बिछड़े हुए साथी हैं। स्मृतियों में वे छाये रहेंगे सदा, मगर उस सहज वात्सल्य से हम सदा वंचित रहेंगे। राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति के वे उपाध्यक्ष भी रहे, कोषाध्यक्ष भी रहे और सक्रिय सदस्य के रूप में सदा अपनी सेवाओं से समिति को दिशा देते रहे। संस्थाएं यदि मजबूती के साथ खड़ी रहती हैं बरसों तक तो ऐसे ही कर्मठ कार्यकर्ताओं के कारण। आज राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति उनको खोकर एक प्रबुद्ध, प्रखर और समर्पित कार्यकर्ता के साथ से वंचित हो गयी है। हम सभी लोग श्रद्धावनत हैं। नमन। ❑